RNI No. UPHIN/2000/3766 ISSN No. 2581-3528 ₹ : 20

केशव संवाद

(मई-जून 2023, संयुक्तांक)

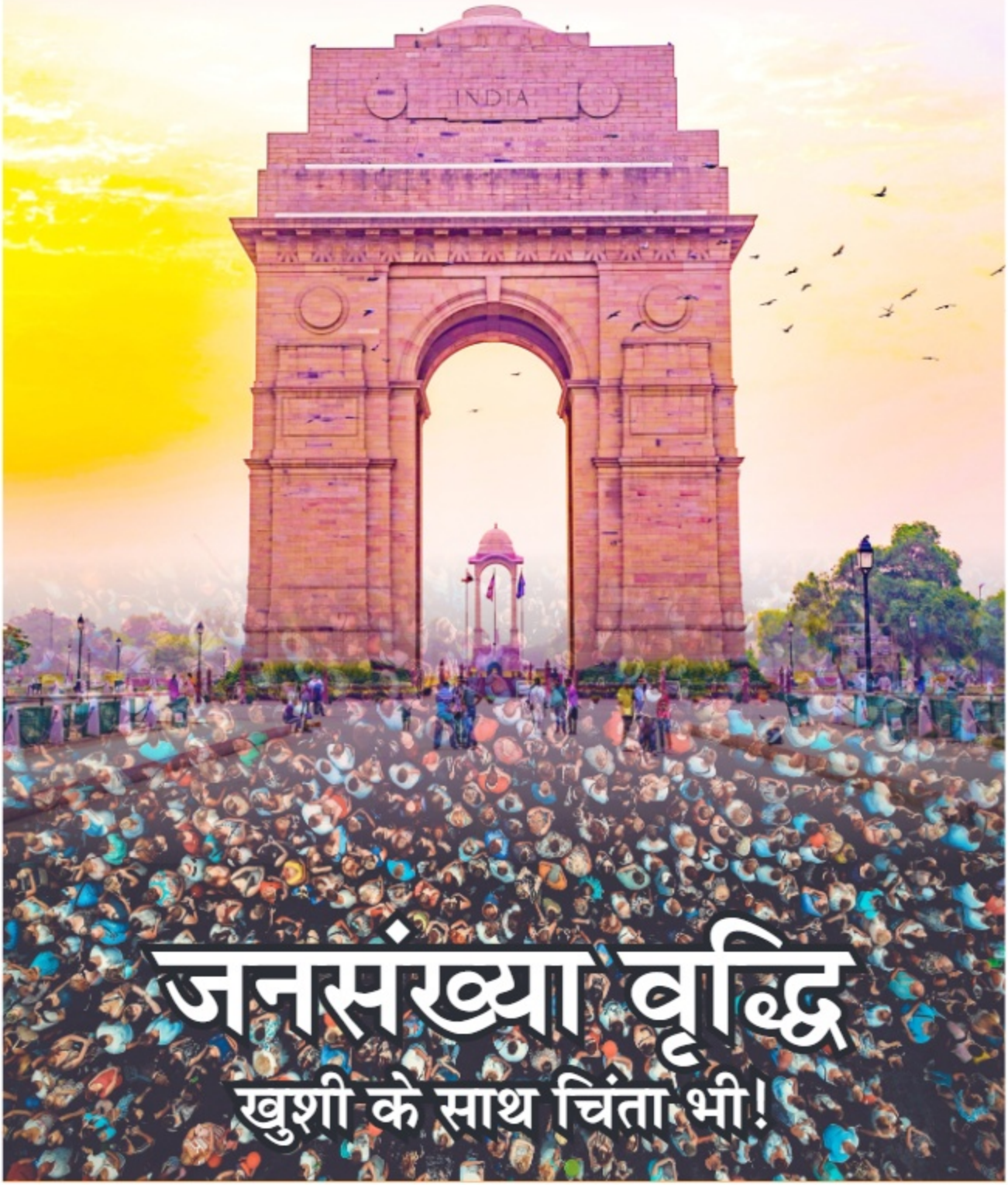

जनसंख्या वृद्धि

खुशी के साथ चिंता भी!

जून-2023, जेष्ठ- आषाढ़, विक्रम सम्वत् 2080

हिन्दी पंचांग

SUN रविवार	MON सोमवार	TUE मंगलवार	WED बुधवार	THU गुरुवार	FRI शुक्रवार	SAT शनिवार
				1 वटसावित्री व्रतारंभ ज्येष्ठ शु.१२	2 ज्येष्ठ शु.१३	3 वटपूर्णिमा ज्येष्ठ शु.१४
4 कबीर जयंती ज्येष्ठ पूर्णिमा	5 आषाढ मासारंभ आषाढ कृ.१/२	6 आषाढ कृ.३	7 गणेश संकष्ट चतुर्थी आषाढ कृ.४	8 आषाढ कृ.५	9 आषाढ कृ.६	10 कालाष्टमी आषाढ कृ.७
11 आषाढ कृ.८	12 आषाढ कृ.९	13 आषाढ कृ.१०	14 योगिनी एकादशी आषाढ कृ.११	15 प्रदोष आषाढ कृ.१२	16 शिवरात्री आषाढ कृ.१३	17 दर्श अमावस्या आषाढ कृ.१४
18 आषाढ अमावस्या	19 चंद्रदर्शन आषाढ शु.१	20 रथयात्रा आषाढ शु.२	21 आषाढ शु.३	22 विनायक चतुर्थी आषाढ शु.४	23 हेरापंचमी आषाढ शु.५	24 कुमार षष्ठी आषाढ शु.६
25 भानु सप्तमी आषाढ शु.७	26 दुर्गाष्टमी परशुरामाष्टमी आषाढ शु.८	27 आषाढ शु.९	28 आषाढ शु.१०	29 देवशयनी एकादशी बकरी ईद आषाढ शु.११	30 वामन पूजन आषाढ शु.१२	

जून 2023 त्यौहार

01 बृहस्पतिवार	प्रदोष व्रत	03 शनिवार	वट पूर्णिमा व्रत, अन्वाधान	04 रविवार	ज्येष्ठ पूर्णिमा, इष्टि
07 बुधवार	कृष्णपिङ्गल संकष्टी चतुर्थी	14 बुधवार	योगिनी एकादशी	15 बृहस्पतिवार	मिथुन संक्रान्ति, प्रदोष व्रत
17 शनिवार	दर्श अमावस्या, अन्वाधान	18 रविवार	इष्टि, आषाढ़ अमावस्या	19 सोमवार	आषाढ़ नवरात्रि, चन्द्र दर्शन
20 मंगलवार	जगन्नाथ रथयात्रा	25 रविवार	भानु सप्तमी	29 बृहस्पतिवार	देवशयनी एकादशी

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/3766

ISSN No. 2581-3528

मई-जून, 2023 संयुक्तांक
वर्ष : 23 अंक : 05-06

संपादक
कृपाशंकर

सह संपादक
डॉ. प्रदीप कुमार

कार्यकारी संपादक
डॉ. नीलम कुमारी

पृष्ठ संयोजन
वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201301
फोन न. 0120 4565851, 2400335
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

संपादकीय.....04

संगीत से प्रेम, अवसाद को रखेगा कोसो दूर -सोनम लववंशी..... 05

जनसंख्या वृद्धि खुशी के साथ चिंता भी ! - प्रमोद भार्गव.....06

आदि पत्रकार देवर्षि नारद - मृत्युंजय दीक्षित.....08

संसद का नया भवन लोकतंत्र और राष्ट्रीय अस्मिता .... - मोहित कुमार.....10

सच से भागता विपक्ष - ललित शंकर.....13

सेवा, सुशासन और विकास को समर्पित मोदी सरकार - डॉ. सौरभ मालवीय...14

1857 में सीकरी का बलिदान - अशोक चौधरी.....16

धारा 370 हटने के बाद जम्मू एवं कश्मीर बन रहा है... - प्रहलाद सबनानी..... 18

दीनदयाल जी के 'एकात्म मानवदर्शन' की दुनिया ... - पंकज जगन्नाथ.....20

स्वस्थ मातृत्व के लिए वरदान है योग - डॉ. नीलम कुमारी.....22

ग्रामीण भारत का विकास और मीडिया शोध ... - डॉ. आशीष कुमार.... 24

फायदेमंद है रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल - मोनिका राज.....26

मीडिया सुर्खियां - प्रतीक खरे.....28

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय.....

अंधकार है वहां जहां आदित्य नहीं है

और मृदा है वह देश जहां साहित्य नहीं है

साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं बल्कि किसी भी समाज की दशा एवं दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लेखक की लेखनी से ऐसे प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं जो सभी के मन में चल रहे होते हैं लेकिन हम उसको व्यक्त नही कर पाते। किसी ने बहुत सटीक कहा है कि

"Pen is mighter than sword "

वास्तव में एक लेखक की ताकत उसकी लेखनी से और पत्र और पत्रिकाओं का महत्व उसके अंदर लिखे गए लेखों से पता चलता है केशव संवाद पत्रिका का मई और जून का यह संयुक्तअंक आप सभी के समक्ष रखते हुए बड़े हर्ष का अनुभव हो रहा है कि एक और जहां हम सभी ने 10 मई 1857 की क्रांति को याद किया वहीं दूसरी ओर 21 जून को न केवल भारत ने बल्कि पूरे विश्व के लगभग 180 देशों ने एक साथ योग कर पूरे विश्व को योगमय बना दिया और एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। एक और जहां भारतीय लोकतंत्र के मंदिर नए संसद भवन की स्थापना हुई वही वहीं भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या ने भारत के विश्व गुरु की ओर अग्रसर होते हुए पथ पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया यह अब सोचने का विषय है कि भारत जो नित नवीन ऊंचाइयों को प्राप्त करता जा रहा है ऐसे में सीमित संसाधन होने के बाद भारत की जनसंख्या की दृष्टि में चीन से भी आगे निकलना वास्तव में चिंता का विषय है।

'संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष' की रिपोर्ट ने जब ये आंकड़े जारी किए कि भारत की आबादी चीन से अधिक बढ़ गई है, तो चिंता बढ़ना स्वाभाविक है। चीन की आबादी इस समय 142.57 करोड़ है जबकि भारत 142.86 करोड़ जनसंख्या के साथ विश्व का सबसे बड़ी आबादी वाला देश बन गया है। हमारी आबादी चीन से 29 लाख अधिक है। भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश को जहां यह बड़ी चुनौती है, वहीं उसे वरदान बनाने की जरूरत है।

अत: पत्रिका में समाज के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्षों को दर्शना आवश्यक होता है ताकि उस पर चिंतन किया जा सके, मनन किया जा सके और किसी भी समस्या के कारण एवं निवारण के उपायों के विषय में उसके सुधी पाठकों के लिए छोड़ दिया जाए।

संपादक

ISSN No. 2581-3528

संगीत से प्रेम, अवसाद को रखेगा कोसो दूर

सोनम लववंशी

लोग अक्सर यह कहते हैं कि संगीत ईश्वर से जोड़ता है। ईश्वर से मिलन का माध्यम है। संगीत एक सेतु है, जिसके माध्यम से हम उस परम शक्ति के नजदीक पहुँचते हैं। जिनकी परिकल्पना हमारे ग्रन्थों में है। वास्तव में देखें तो संगीत की महिमा अनंत है और यही वजह है कि साहित्य में हमें पढ़ने को मिलता है कि अतीत में जब संगीतकार अपनी धुन छेड़ते थे तो मेघ बरस उठते थे और दिए स्वतः प्रज्वलित हो जाते थे। वैसे आजकल भी संगीत की अपनी एक महत्ता है और यही वजह है कि अब बड़े–बड़े शहरों में 'म्यूजिक थेरेपी' का उपयोग उपचार में होने लगा है। स्ट्रेस, तनाव, डिप्रेशन से उबरने में म्यूजिक मदद करता है और इस बात की सत्यता को कई तरह से प्रमाणित भी किया जा सकता है। ज्यादा दूर जाने की बात नहीं है। हालिया दौर में रांची के रिम्स में ऐसा ही एक प्रयोग हुआ। जिसके नतीजे काफी सकारात्मक और सुकून देने वाले हैं। रिम्स के न्यूरोलॉजी डिपार्टमेंट में एक महीने के लिए म्यूजिक थेरेपी पायलेट प्रोजेक्ट के तौर पर लाई गई और वहां के न्यूरो सर्जन डॉ सुरेंद्र कुमार के मुताबिक स्टेस, डिप्रेशन और मानसिक बीमारियों से जूझ रहे चार मरीजों के साथ इसका प्रयोग किया गया। ऐसे में मरीजों के परिजनों ने बताया कि कुछ ही सेशन में शामिल होने के बाद उनमें सकारात्मक बदलाव महसूस किए गए।

संगीत और बीमारियों पर ऐसा ही एक शोध अमेरिका की नार्थइस्टर्न यूनिवर्सिटी में भी हुआ। जिसकी शोध रिपोर्ट में बताया गया कि अगर कोई अवसादग्रस्त है, तो उसे म्यूजिक थेरेपी से राहत मिलेगी। उसका दिमाग शांत होगा और उसे अवसाद और चिंता से छुटकारा मिलेगा। रिसर्च में वैज्ञानिकों ने पाया था कि रोज कम से कम एक म्यूजिक सुनने या म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट्स बनाने वाले मरीज जल्द अवसाद से ठीक हुए। ऐसे में जिस दौर में दुनिया में अवसाद बढ़ रहा है। युवा पीढ़ी बहुत जल्द बेचैन हो उठती है। उनमें धैर्य और साहस की कमी होती जा रही है। फिर यह पद्धति काफी कारगर सिद्ध हो सकती है। भारतीय दर्शन में भी संगीत की व्याख्या दार्शनिकों ने की है। संगीत के माध्यम से उन्होंने उस 'परमब्रह्म' की अनुभूति की। जिस तक पहुँचने का मार्ग काफी कठिन होता है। छान्दोग्य उपनिषद में उपासना की अनेक विधियों में 'ओम' की सर्वाधिक व्याख्या हुई।

संगीत के दार्शनिक पक्ष की परिणति ही वस्तुतः प्रणव है। संगीत को साधन और साध्य दोनो ही रूपों में स्वीकृत किया गया है इसीलिए उसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का साधन भी माना गया है। नाट्यशास्त्र में व्यापक रूप में 'नाद' के अर्थ में 'वाद', और 'शब्द' शब्दों का प्रयोग हुआ है तथा नाट्य शास्त्र के बाद सभी ग्रंथों में संगीतोपयोगी ध्वनि के लिए 'नाद' का प्रयोग हुआ है। नाद का मूल कारण है कम्पन, जिसके बिना नाद या ध्वनि की कल्पना नहीं की जा सकती। नाद के बिना किसी संगीत का सृजन नहीं किया जा सकता। संगीत द्वारा लौकिक तथा अलौकिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक हर तरह का आनंद प्राप्त किया जा सकता है। संगीत ही वह माध्यम है जो सांसारिकता से परे आध्यात्मिक सुख–शांति की अनुभूति करा सकता है। यह लौकिक अभ्युदय के साथ–साथ पारलौकिक कल्याण की सिद्धि का साधन भी माना जा रहा है।

संगीत अपने आपको संभालने की एक रागात्मक प्रकिया है। जिसमें वृत्तियां अपने आप वश में हो जाती है और वासनाएं शिथिल पड़ने लग जाती हैं। ऐसे में मन का तनाव खत्म हो जाता है और वह संयमित हो जाता है। शरीर और मन की गतिविधियों को भी संगीत नियंत्रित करता है। संगीत वस्तुतः वह व्यायाम है जिसमें मन के विचारों पर नियंत्रण करना सम्भव होता है। मन ही है जो समूचे कायातंत्र पर अपना आधिपत्य रखता है। वह जैसा निर्देश देता है वैसी क्रियायें शरीर द्वारा होती हैं। मानसिक संतुलन को बनाये रखने तथा विचारतंत्र को बिखरने से बचायें रखने का सर्वोत्तम साधन व उपचार संगीत ही है। तभी तो मनोविज्ञानवेत्ता का कहना है कि मन सही तो शरीर सही।

(लेखिका स्वतंत्र लेखिका एवं शोधार्थी हैं)

ISSN No. 2581-3528

जनसंख्या वृद्धि खुशी के साथ चिंता भी !

प्रमोद भार्गव

भारत दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है, जहां दुविधाएं और विरोधाभास प्रगति के समानान्तर चलते हैं। अतएव जनसंख्या बल जहां शक्ति का प्रतीक है, वहीं उपलब्ध संसाधनों पर बोझ भी है। इसलिए अनेक समस्याएं भी सुरसामुख बन खड़ी होती रहती हैं। ये हालात तब और कठिन हो जाते हैं, जब संसाधनों के बटवारे में विसंगति बढ़ती चली जा रही हो? गोया कहा जा सकता है कि बढ़ती आबादी वरदान नहीं बोझ है। नतीजतन 'संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष' की रिपोर्ट ने जब ये आंकड़े जारी किए कि भारत की आबादी चीन से अधिक बढ़ गई है, तो चिंता बढ़ना स्वाभाविक है। हालांकि यह संभावना बहुत पहले से जताई जा रही थी कि भारत आबादी के मामले में चीन को पीछे छोड़ देगा। वाबजूद कुछ जनसंख्या विशेषज्ञ इस बात को लेकर शंका जता रहे हैं कि यह समय अभी नहीं जून में आना था। परंतु आम आदमी को आंकड़ों की बाजीगरी न तो आसानी से समझ आती है और न ही वह किसी निष्कर्ष पर पहुंच पाता है। अतएव चीन के इस बयान पर गौर करने की जरूरत है कि वह आंकड़े आने के बाद आखिर यह क्यों कह रहा है कि अभी भी उसके पास 90 करोड़ से ज्यादा लोग ऐसे हैं, जो कुशल उत्पादन की क्षमता रखते हैं। याद रहे चीन ने प्रगति की उड़ान और वैश्विक बाजार में वर्चस्व इसी आबादी के बूते पाया है। इसलिए चीन को अब यह चिंता सताने लगी है कि कहीं भारत इस आबादी के बूते अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाने में सफल न हो जाए? क्योंकि इस रिपोर्ट के अनुसार भारत के पास 68 प्रतिशत आबादी ऐसे क्रियाशील लोगों की या युवाओं की है, जो उत्पादकता से निरंतर जुड़े रहकर अपने उत्पादों को दुनिया के बाजार में पहुंचाकर अर्थव्यवस्था को शिखर पर पहुंचा सकते हैं।

वर्तमान में दुनिया की आबादी 8 अरब की संख्या पहले ही पार कर चुकी है। भारतीय आबादी के ताजा आंकड़ों के अनुसार प्रत्येक पांचवे व्यक्ति में से एक भारतीय है। क्योंकि भारत 142.86 करोड़ जनसंख्या के साथ विश्व का सबसे बड़ी आबादी वाला देश बन गया है। चीन की आबादी इस समय 142.57 करोड़ है। हमारी आबादी उससे 29 लाख अधिक है। भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश को जहां यह बड़ी चुनौती है, वहीं उसे वरदान बनाने की जरूरत है। हालांकि जागरूकता और परिवार नियोजन के उपायों के चलते दुनिया में जन्मदर घटी है। हालांकि भारत दुनिया का ऐसा पहला देश है, जिसने आबादी पर नियंत्रण के लिए 1952 में परिवार नियोजन कार्यक्रम आरंभ किया था। बावजूद जनसंख्या वृद्धि होती रही है। जनसांख्यिकीय विश्लेषण के निष्कर्ष बताता है कि 1950 के बाद वर्तमान में जन्मदर सबसे कम है। अतएव यहां सवाल उठता है कि फिर आबादी का घनत्व क्यों बढ़ रहा है? दरअसल चिकित्सा सुविधाओं और एक वर्ग विशेष की माली हैसियत बढ़ने से औसात उम्र बढ़ी है। इस दायरे में आने वाले लोग उत्पादकता से जुड़े नहीं रहने के बावजूद उच्च श्रेणी का जीवन जी रहे हैं। नतीजतन यह आबादी जापान, चीन और दक्षिण कोरिया की तरह भारत के युवाओं को रोजगार में बाधा बन रही है। भारत में सबसे अधिक बेरोजगारी 15 से 36 आयु वर्ग के युवाओं में है। यदि हम पीपुल्स कमीशन की रिपोर्ट का उल्लेख करें तो 15 से 29 आयु समूह में बेरोजगारों की संख्या 27.8 करोड़ है। हालांकि इसमें अनेक बेरोजगार ऐसे हैं, जिनके पास काम तो है, लेकिन आमदनी का अनुपात सन्तोषजनक नहीं है। भारत के सीमांत राज्यों में विदेशियों की घुसपैठ और कमजोर जाति समूहों का धर्मांतरण भी आबादी का घनत्व बढ़ाने और बिगड़ते हुए रोजगार के संकट के साथ स्थानीय मूल निवासियों से टकराव के हालात उत्पन्न कर रहा है। इसीलिए जनसंख्या नीति में समानता की बात की जा रही है।

अब जबकि हम आबादी में चीन से आगे हैं, तब हमें चीन से यह सबक लेने की जरूरत है कि उसने अपने मानव संसाधन को किस तरह से श्रम और उत्पादकता से जोड़ा और दुनिया के बाजारों को अपने उत्पादों से पाट दिया। क्योंकि चीन में बड़ी आबादी के बावजूद रोजगार का संकट भारत की तरह नहीं गहराया। जाहिर है, चीन की उन्नति और उत्पदकता में इसी आबादी का रचनात्मक योगदान रहा है। सस्ते कुशल एवं अर्द्धकुशल लोगों से उत्पादन कराकर चीन ने अपना माल दुनिया के बाजारों में भर दिया है। जबकि भारत बड़ी कंपनियों को सब्सिडी देने के

ISSN No. 2581-3528

बावजूद स्वदेशी उत्पादन में आबादी के अनुपात में उल्लेखनीय प्रगति नहीं कर पाया। मेक इन इंडिया के नाम पर हाल ही में दो कंपनियों हीरो इलेक्ट्रिक और ओकीनावा की 370 करोड़ रुपए की सब्सिडी की राशि देने पर भारत सरकार ने रोक लगा दी है। सरकार ने फास्टर एडॉप्सन एंड मैन्यू फैक्चरिंग ऑफ इलेक्ट्रिक व्हीकल्स (फेम)–2 योजना के तहत दो पहिया इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री को प्रोत्साहित करने हेतु 10,000 करोड़ रुपए का बजट तय किया है। भारी उद्योग मंत्रालय की तरफ से प्रत्येक इलेक्ट्रिक वाहन को सब्सिडी दी जाती है। इलेक्ट्रिक स्कूटर पर 15000 रुपए प्रति किलोवाट के हिसाब से सब्सिडी दी जाती है। लेकिन यह सब्सिडी तभी दी जाएगी, जब उत्पादन स्वदेशी के स्तर पर किया जाए। लेकिन सरकार ने जब जांच की तो पाया कि इन कंपनियों ने इन वाहनों में चीन से आयात कल–पुर्जे इस्तेमाल किए हैं। इसी कारण दो पहिया वाहनों में आग लगने की घटनाएं बढ़ रही हैं। इस धोखाधड़ी के चलते हीरो इलेक्ट्रिक की 220 करोड़ और ओकीनावा की 150 करोड़ रुपए की सब्सिडी रोक दी। इन धोखाधड़ियों के चलते भी भारत स्वदेशीकरण के साथ बेरोजगारी से पार नहीं पा रहा है।

यदि हम चीन में ज्ञान–परंपरा से दीक्षित लोगों को रोजगार देने की बात करें तो वहां सरकार या कंपनी द्वारा गांव–गांव कच्चा माल पहुंचाया जाता है। जब वस्तु का निर्माण हो जाता है, तो उस माल को लाने और मौके पर ही भुगतान करने की जबावदेही संस्थागत है। इसका फायदा यह होता है कि ग्रामीण अपने घर में ही वस्तु का उत्पादन कर लेता है। नतीजतन वस्तु की लागत न्यूनतम होती है। यदि यही व्यक्ति शहर में जाकर उत्पदकता से जुड़े तो उसे कमाई की बड़ी राशि रहने, खाने–पीने और यातायात में खर्च करनी पड़ जाती है। भारत में उत्पादन के छोटे–बड़े कारखाने

शहरों में हैं। लिहाजा वस्तु की लागत अधिक आती है। चीन में होली, दिवाली और रक्षाबंधन से जुड़ी जो वस्तुएं आयात होती हैं, उनका उत्पादन चीन के गांव में ही होता है। जाहिर है, यदि बड़ी जनसंख्या उत्पादन से जुड़ जाए बेरोजगारी की समस्या से एक हद तक छुटकारा मिल सकता है। युवा समस्या तब बनते हैं, जब उनके हाथों में काम न हो? जापान और दक्षिण कोरिया में जनसंख्या का घनत्व भारत से ज्यादा है, बावजूद ये देश हमसे अधिक संमृद्ध होने के साथ स्वदेशी प्रौद्योगिकी से उत्पादन और उसके निर्यात में हमसे आगे हैं। अतएव भारत को चीन, जापान और कोरिया से सीख लेने की जरूरत है।

यह बात लोगों को रोजगार से जोड़ने की हुई, लेकिन जनसंख्या वृद्धि पर एक नीति बने बिना, बात बनने वाली नहीं है। दो बच्चों की यह नीति सभी धर्म एवं समुदायों के लोगों पर समान रूप से लागू हो। क्योंकि जनसंख्या एक समस्या भी है और एक साधन भी है। लेकिन जिस तरह से देश के सीमांत प्रांतों और कश्मीर में जनसंख्यात्मक घनत्व बिगड़ रहा है, उस संदर्भ में जरूरी हो जाता है कि जनसंख्या नियंत्रण कानून जल्द वजूद में आए। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ हिंदुओं की आबादी घटने पर कई बार चिंता जता चुका है। साथ ही हिंदुओं को ज्यादा बच्चे पैदा करने की सलाह भी संघ के कार्यवाहक देते रहे हैं। इन बयानों को अब तक हिंदू पक्षधरता के दायरे में समेटने की संकीर्ण मानसिकता जताई जाती है, जबकि इसे व्यापक दायरे में लेने की जरूरत है। कश्मीर, केरल समेत अन्य सीमांत प्रदेशों में बिगड़ते जनसंख्यात्मक अनुपात के दुष्परिणाम कुछ समय से प्रत्यक्ष रूप से देखने में आ रहें हैं। कश्मीर में पुश्तैनी धरती से 5 लाख विस्थापित हिंदुओं का पुनर्वास धारा–370 हटने के बाद भी आतंकी घटनाओं के चलते नहीं हो पाया है। बांग्लादेशी धुसपैठियों के चलते असाम व अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में बदलते जनसंख्यात्मक घनत्व के कारण जब चाहे तब दंगों के हालात उत्पन्न हो जाते हैं। यही हालात पश्चिम बंगाल में देखने में आ रहे हैं। जबरिया धर्मांतरण पूर्वोत्तर और केरल राज्यों में बढ़ता ईसाई वर्चस्व ऐसी बड़ी वजह बन रही हैं, जो देश के मौजूदा मानचित्र की शक्ल बदल सकती हैं? हालांकि चंद तथाकथित बौद्धिक जनसंख्या नियंत्रण के नीतिगत उपायों में बड़ी बाधा हैं और ये तर्क से ज्यादा कहीं कुतर्क करते हैं। लिहाजा परिवार नियोजन के एकांगी उपायों को खारिज करते हुए आबादी नियंत्रण के उचित उपायों पर नए सिरे से सोचने की जरूरत है।

(लेखक, साहित्यकार एवं वरिष्ठ पत्रकार हैं)

ISSN No. 2581-3528

आदि पत्रकार देवर्षि नारद

मृत्युंजय दीक्षित

सृष्टिकर्ता प्रजापति ब्रहमा के मानस पुत्र नारद। महान तपस्वी, तेजस्वी, सम्पूर्ण वेदान्त, शास्त्र के ज्ञाता तथा समस्त विद्याओं में पारंगत नारद। ब्रह्मातेज से संपन्न नारद। नारद जी के महान कृतित्व व व्यक्तित्व पर जितनी भी उपमाएं लिखी जाए कम हैं। देवर्षि नारद ने अपने धर्म से परमात्मा का ज्ञान प्राप्त किया। वे प्राणी मात्र के कल्याण के लिए सदा उपस्थित रहे। वे देवता, दानव और मानव समाज के हित के लिये सर्वत्र विचरण, चिंतन व विचार मग्न रहते थे। देवर्षि नारद की वीणा से निरंतर नारायण की ध्वनि निकलती रहती थी। भगवदभक्ति की स्थापना तथा प्रचार के लिए ही नारद का अवतार हुआ। नारद चिरंजीवी हैं। नारद जी का संसार में अमिट प्रभाव है। देव, दानव, मानव सबके सत्कार्यों में देवर्षि नारद सहायक सिद्ध होते हैं। नारद जी का जीवन जनकल्याण व मंगलमय जीवन के लिये ही है। नारद जी पर नारायण की विशेष कृपा है। वे शत्रु तथा मित्र दोनों में ही लोकप्रिय थे।

देवर्षि नारद त्रिकालदर्शी व पृथ्वी सहित सभी ग्रह नक्षत्रों में घट रही घटनाओं के ज्ञाता तो थे ही उनके मन में कठिन से कठिन समस्याओं के समाधान भी चलायमान रहते थे। देवर्षि नारद व्यास, वाल्मीकि, शुकदेव जी के गुरु रहे। नारद ने ही प्रहलाद, ध्रुव, राजा अम्बरीश आदि को भक्ति मार्ग पर प्रवृत्त किया। नारद ब्रहमा, शंकर, सनतकुमार, महर्षि कपिल, मनु आदि बारह आचार्यों में अन्यतम हैं। प्रचलित कथा के अनुसार देवर्षि नारद अज्ञातकुलशील होने पर भी देवर्षि पद तक पहुंच गये थे। बाल्यकाल में भी उनके मन में चंचलता नहीं थी, वे मुनि जनों की आज्ञा का पालन किया करते थे। उनकी अनुमति प्राप्त करके वे बर्तनों में लगी हुई जूठन दिन में एक बार खा लिया करते थे।इससे उनके जन्म के सारे पाप धुल गये। नारद की सेवा से प्रभावित होकर मुनिगण उन पर अपनी कृपा रखने लगे।

संतों की सेवा करते–करते उनका हृदय शुद्ध रहने लगा। भजन –पूजन में उनकी रुचि बढ़ती गयी। उनके हृदय में भक्ति का प्रादुर्भाव हो गया। वे अपनी माता के साथ ब्राह्मण नगरी में रहते थे। माता के कारण वे भी कहीं अन्यत्र नहीं जा सके। कुछ दिनों बाद एक दिन उनकी माता को सर्प ने काट लिया जिससे उनकी मृत्यु हो गयी नारद जी ने उसे विधि का विधान माना और गृह का त्याग करके उत्तर दिशा की ओर चल दिये। इसके बाद उन्होनें अपनी सतत् साधना और तपस्या के बल पर देवर्षि का पद प्राप्त किया। किसी–किसी पुराण में देवर्षि नारद को उनके पूर्वजन्म में सारस्वत नामक एक ब्राहमण बताया गया है। जिन्होनें "ॐ नमो नारायणाय" मंत्र के जाप से भगवान नारायण का साक्षात्कार किया।

कालांतर में पुनः ब्रहमा जी के दस मानस पुत्रों के रूप में जन्म लिया। नारद शुद्धात्मा, शांत, मृदु तथा सरल स्वभाव के हैं। मुक्ति की इच्छा रखने वाले सभी लोगों के लिए नारद जी स्वयं ही प्रयत्नशील रहते हैं। नारद जी को ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन होते थे। उन्हें ईश्वर का मन कहा गया है। वे परम हितैषी हैं उनका अपना कोई स्वार्थ नहीं हैं। वे प्रभु की प्रेरणा से निरंतर कार्य करते रहते हैं। नारद जी ने दक्ष प्रजापति के हयाश्व–शब लाक्ष नामक सहस्र पुत्रों को अध्यात्म तत्व का पाठ पढ़ाया। देवर्षि नारद ने सभी के लिये भगवदभक्ति का द्वार खोल रखा था। वे जीवमात्र के कल्याण के लिये भगवान नाम कीर्तन की प्रेरणा देते रहते हैं। देवर्षि नारद का वर्ण गौर सिर पर सुंदर शिखा सुशोभित है। उनके शरीर में एक विशेष प्रकार की उज्जवल ज्योति निकलती रहती थी। वे देवराज इंद्र द्वारा प्राप्त श्वेत दिव्य वस्त्रों को धारण किये रहते हैं। वे अनुषांगिक धर्मों के ज्ञाता थे। नारद लोप, आगम, धर्म तथा वृत्ति संक्रमण के द्वारा प्रयोग में आये हुये

ISSN No. 2581-3528

एक– एक शब्द की अनेक अर्थो में विवेचना करने में सक्षम थे। कृष्ण युग में गोपियों का वर्चस्व स्थापित किया। प्रथम पूज्य देव गणेश जी को नारद जी का ही मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था।

देवर्षि नारद स्वभावतः धर्म निपुण तथा नाना धर्मों के विशेषज्ञ हैं। वे चारों वेदों के ज्ञाता हैं। उन्होंने विभिन्न वैदिक धर्मों की मर्यादाएं स्थापित की हैं। वे अर्थ की व्याख्या के समय सदा संशयों का उच्छेद करते हैं। नारद जी के द्वारा रचित अनेक ग्रंथों का उल्लेख मिलता है – जिनमें प्रमुख हैं नारद पंचरात्र, नारद महापुराण, वृहद रदीय पुराण, नारद स्मृति, नारद भक्ति सूत्र, नारद परिव्राजक उपनिषद आदि। इसके अतिरिक्त नगरीय शिक्षा शास्त्र के साथ ही अनेक स्तोत्र भी नारद जी के द्वारा रचित बताये जाते है।

भगवद भक्ति की स्थापना तथा प्रचार के लिये नारद जी का आविर्भाव हुआ। देवर्षि नारद धर्म के प्रचार तथा लोक कल्याण हेतु सदैव प्रयत्नशील रहते थे। इस कारण सभी युगों में सभी लोकों में समस्त विद्याओं में समाज के सभी वर्गो में नारद जी का सदा से प्रवेश रहा है। मात्र देवताओं ने ही नहीं वरन दानवों ने भी उन्हें सदैव आदर किया है। समय –समय सभी ने उनसे परामर्श लिया है। नारद जी भागवत संवाददाता भी थे, संदेश वाहक भी थे और ब्रह्माण्ड के प्रथम पत्रकार भी माने गये।

नारद जी के विभिन्न उपनाम भी हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में उन्हें विचार अर्थात सूचना देने वाला पत्रकार कहा गया है। इसके अतिरिक्त संस्कृत के शब्दकोष में उनका एक नाम "पिशुन" आया है जिसका अर्थ है सूचना देने वाला संचार, सूचना पहुंचाने वाला, सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक देने वाली है। आचार्य पिशुन से स्पष्ट है कि देवर्षि नारद तीनों लोकों में सूचना अथवा समाचार के प्रेषक के रूप

में परम लोकप्रिय थे।

वे रामायण युग में भी थे तो महाभारत काल में पांडवों के सबसे बड़े हित साधक भी थे। जनमानस के कल्याणार्थ नारद मुनि ने सत्यनारायण भगवान की कथा, व्रत महात्मय आदि की श्रेष्ठता समाज में स्थापित की। जिज्ञासा प्रकट करने के बाद ही भगवान श्रीहरि ने नारद जी को समस्त पूजा एवं हवन का विस्तार से वर्णन किया और अंत में आश्वस्त करते हुए उनसे कहा कि श्रद्धा पूर्वक किया गया भगवान सत्य नारायण का व्रत सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है। महाभारत युग में भी पाण्डवों का हित साधन नारद जी ने ही किया था। महारानी द्रौपदी को पांच पांडवों के साथ रहने का नियम भी नारद जी ने ही बनवाया था जिससे पतिव्रता द्रौपदी और पांचों पांडवों के बीच सामंजस्य का वातावरण बना रहे।

नारद जी के व्यक्तित्व व कृतित्व को लेकर भांति – भांति की कथाएं प्रचलित हैं। सभी पुराणों में महर्षि नारद एक मुख्य व अनिवार्य भूमिका में उपस्थित हैं। परमात्मा के विषय में संपूर्ण ज्ञान प्राप्त करने वाले दार्शनिक को नारद कहा गया है। पुराणों में नारद को भागवत संवाददाता भी कहा गया है। यह भी सर्वमान्य है कि नारद की ही प्रेरणा से महर्षि वाल्मीकि ने रामायण जैसे महाकाव्य और व्यास ने महाभारत जैसे काव्य की रचना की थी।

नारद सदैव ही सामूहिक कल्याण की भावना को सर्वोपरि रखते थे। नारद में अपार संचार योग्यता व क्षमता थी। आदि पत्रकार नारद जी की पत्रकारिता सज्जन रक्षक व एवं दुष्ट विनाशक की थी। वे सकारात्मक पत्रकार की भूमिका में रहा करते थे। पत्रकार के रूप में काशी, प्रयाग, मथुरा, गया, बद्रिकाश्रम, केदारनाथ, रामेश्वरम सहित सभी तीर्थों की सीमा तथा महत्व का वर्णन नारद पुराण में मिलता हैं। देवर्षि नारद जी की पत्रकारिता समाज के लिए हितकारी व दुष्टों का संहार करने वाली थी। नारद जी की पत्रकारिता अध्यात्म पर आधारित थी। उन्होंने स्वार्थ, लोभ, एवं माया के स्थान पर परमार्थ को श्रेष्ठ माना। महान विपत्तियों से मानवता की रक्षा का काम किया।

वर्तमान समय में पत्रकारिता को नारदीय आदर्श अपनाने की आवश्यकता है।

(लेखक स्तम्भकार हैं)

ISSN No. 2581-3528

संसद का नया भवन लोकतंत्र और राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक

मोहित कुमार

भारतीय स्वामित्व में नवनिर्मित लोकतंत्र का मंदिर (संसद भवन) न केवल प्रतिनिधियों के नेतृत्व का स्थान है बल्कि नई संसद देश की आत्मा और अस्मिता का प्रतीक भी है। भारतीय संसद का आध्यात्मिक और पारंपरिक इतिहास प्रेरणादायी है। विश्व पटल पर भारत की बौद्धिक नीति विशिष्ट पहचान बनकर प्रतिस्थापित हो रही है। संसद में स्थापित की गई सेंगोल, धर्म व न्याय आधारित सनातन भारतीय शासन व्यवस्था का प्रतीक है, यह शास्त्र सिद्ध भी है और प्रमाण सिद्ध भी, परन्तु आज ये बीती सदियों और स्वाधीनता पश्चात के दशकों का विस्मरण, भय और षड्यंत्रों की ओर ध्यान खींचने वाला माध्यम भी बन गया है। एक तरफ सुधी नागरिक, इसमें अपने शाश्वत जीवन-मूल्यों और गौरव को देख रहे हैं, वहीं दूसरी ओर इकोसिस्टम में हाहाकार मचा है, जिनको इसमें अपने अस्तित्व पर संकट की पारदर्शिता नजर आ रही है। सेंगोल का विरोध, उसके इतिहास को झुठलाकर उसे "नेहरु जी की वहकिंग स्टिक" मनवाने की सनक भरी कोशिशें, कथित सेकुलरिज्म के लिए मर्सिया गाते वामपंथी पत्रकारों के लेख, समारोह का विरोध, किसी छटपटाहट की ओर इशारा कर रहे हैं। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने २८ मई के उद्घाटन को नेहरूवाद और नेहरु की अंत्येष्टि (28 मई 1964) से जोड़ा, तो राजद ने संसद भवन के साथ ताबूत का चित्र ट्वीट कर डाला।

इकोसिस्टम की एक और आपत्ति ये भी है कि 28 मई वीर सावरकर की जन्मतिथि है। उन्हें इस बात से मतलब नहीं कि सावरकर भारत के प्रथम क्रांति संगठनकर्ता, लेखक, 1857 का प्रामाणिक इतिहास लिखने वाले पहले इतिहासकार, विचारक, विदेशी वस्त्रों की पहली होली जलाने वाले, दो आजीवन कारावास की सजा पाने वाले और समाज में छुआछूत मिटाने के लिए अपने जीवन के कई दशक खपाने वाले प्रेरक हैं, उन्हें इस नाम से चिढ़ है क्योंकि सावरकर हिंदुत्व के आग्रही रहे। हिंदुत्व को सर्वोच्च न्यायालय ने रिलीजन के दायरे में न रखते हुए 'जीवन जीने का

ISSN No. 2581-3528

तरीका' कहा है। इसीलिए संविधान की मूल प्रति में राम-जानकी-लक्ष्मण का चित्र है। गीता का उपदेश देते कृष्ण का चित्र है। वहाँ नटराज हैं, देवी-देवता, तप करते ऋषि-मुनि हैं। भगवान बुद्ध और महावीर हैं । कुतर्क दिए जा रहे हैं कि सेंगोल राजतंत्र का प्रतीक है, 'सेकुलर' संसद की 'सेरेमनी' में नंदी का क्या काम है। राजनीतिक मजबूरियों के चलते कुछ लोग उद्घाटन कौन करे, इस पर केंद्रित रहे, लेकिन इन मजबूर नेताओं के बौद्धिक सिपहसालार, कामरेड, समारोह में पुरोहितों की उपस्थिति, पूजन, अन्य भारतीय प्रतीकों पर खुलकर जुबानी कोड़े बरसा रहे हैं। "धर्म का यहाँ क्या काम?" पूछने वाले जवाब नहीं देते कि अशोक चक्र वास्तव में धर्मचक्र है, उसे संविधान निर्माताओं ने क्यों अपनाया? नंदी से सेकुलरिज्म को खतरा है तो शेरों के प्रतीक चिन्ह को क्यों अपनाया गया? संविधान की मूल प्रति में पहला चित्र सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त हुए नंदी का है।

क्या नृसिंह भगवान की, सिंह की सवारी करने वाली शक्ति, की जानकारी संविधान निर्माताओं को नहीं थी? धर्म शब्द से संविधान को इतना परहेज होता तो हमारी खुफिया एजेंसी रॉ का ध्येय वाक्य "धर्मो रक्षति रक्षितः" क्यों है जिसका अर्थ होता है "धर्म की रक्षा करो, धर्म हमारी रक्षा करता है।" धर्म का अर्थ क्या है? संविधान की मूल प्रस्तावना में धर्मनिरपेक्ष शब्द क्यों नहीं जोड़ा गया था?

हमारे देश की विडंबना देखिए, कि सर्वोच्च न्यायालय में महाभारत से लिया हुआ ध्येय वाक्य लिखा है "यतो धर्मस्ततो जयः", अर्थात, "जहाँ धर्म है, वहाँ विजय है," लेकिन, आपातकाल की पृष्ठभूमि में तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने, संविधान की उद्देशिका में ही परिवर्तन करते हुए धर्मनिरपेक्ष शब्द जोड़ दिया। राजनीति से प्रेरित यह कदम भारत के ज्ञानकोष और इतिहास के साथ अन्याय था।

भारतीय परंपरा कहें, अथवा सनातन परंपरा या हिंदू परंपरा, में सदा से धर्म का अर्थ न्याय, कर्तव्य और स्वभाव से रहा है। सबका

कल्याण जिसमें है वह आचरण, धार्मिक या धर्माचरण कहा गया। धर्म अर्थात् रिलीजन नहीं, उसके लिए पूजा, उपासना आदि शब्द रहे हैं। अन्यथा गीता की शुरुआत में "धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे" शब्द क्यों आता, जहाँ दोनों ओर से एक ही कुटुंब के लोग युद्ध करने के लिए खड़े थे। इसे धर्म युद्ध कहा गया, क्योंकि भारत का दर्शन है कि "धर्मेणैव प्रजाः सर्वाः रक्षन्ति स्म परस्परं" धर्म के कारण प्रजा जन परस्पर एक दूसरे की रक्षा करते हैं।

संविधान निर्माता ये बात जानते थे। इसलिए संविधान निर्माताओं ने संविधान की उद्देश्यिका में धर्मनिरपेक्ष शब्द का उपयोग नहीं किया था। 26 नवंबर 1949 को स्वीकृत हमारे संविधान की उद्देश्यिका इस प्रकार थी- "हम, भारत के लोग भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व संपन्न, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, आस्था और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समानता प्राप्त करने के लिए, तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए, दृढ़ संकल्पित होकर अपनी इस संविधान सभा में आज दिनाँक 26 नवंबर 1949 ईव "मिति मार्ग शीर्ष शुक्ल सप्तमी संवत 2006 विक्रमी" को एतद द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।"

यहाँ धर्मनिरपेक्ष शब्द क्यों नहीं है? उपरोक्त वाक्यों पर मनन करें तो ध्यान आएगा कि यह हिंदुत्व की ही एक व्याख्या है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' (सब सुखी हों) 'परोपकाराय पुण्याय, पापाय परपीडनम' (परोपकार पुण्य है, दूसरे को पीड़ा देना पाप है), 'अहम् ब्रह्मास्मि, तत्वमसि' (मैं ब्रहम हूँ,.. वह तुम हो) का यही तो दर्शन है। वेदों में राष्ट्र कल्याण की कामना करती अनेक ऋचाएँ है। अथर्ववेद कहता है कि कल्याण की कामना से ऋषियों ने तप करके इस राष्ट्र का निर्माण किया। प्राचीनकाल से हमारी राष्ट्रीयता की कल्पना का आधार मानव कल्याण है।

जिन अर्थों में आज धर्मनिरपेक्ष शब्द को परिभाषित किया जाता है, उसके लिए संविधान निर्माताओं ने भारत की सनातन परंपरा के अनुरूप "विश्वास, आस्था और उपासना की स्वतंत्रता" का उपयोग किया। धर्मनिरपेक्ष जैसे अर्थहीन शब्द का उपयोग नहीं किया। धर्मनिरपेक्ष और समाजवाद, ये दो अभारतीय शब्द, श्रीमती इंदिरा गाँधी ने 1976 में संविधान की उद्देश्यिका में जोड़े। स्वाधीन भारत का इतिहास साक्षी है कि कितने अधर्म इस शब्द की आड़ में छिप गए।

हजारों वर्षों से सेंगोल न्याय और

ISSN No. 2581-3528

कर्तव्यपालन का प्रतीक रहा है, न कि राजतंत्र का। जब सम्राट युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हुआ, तब भी उनके हाथ में यह दंड थमाया गया था। भगवान् कार्तिकेय के हाथ में भी सेंगोल है। जब राजा का राज्याभिषेक होता था तो उसकी पीठ पर धर्मदंड से तीन बार प्रहार किया जाता था, जिसका अर्थ था कि तुम स्वयं भी न्याय के आधीन हो। इसलिए लोकसभा अध्यक्ष की आसंदी के पार्श्व में इसे स्थापित किया जाना स्वागत योग्य है।

नए संसद भवन में छः द्वारों पर छः मूर्तियाँ हैं, पूर्व में गरुड़, उत्तर में गज, उत्तर पूर्व में हंस, दक्षिण में अश्व, बाघ, मकर आदि। मयूर और कमल की तर्ज पर निचले व उच्च सदन को रचा गया है। राष्ट्रीय वृक्ष बरगद भी यहाँ है। शीर्ष पर विराजमान सिंह पराक्रम की मुद्रा में हैं।

नया संसद भवन और भी कारणों से कुछ लोगों को चुभ रहा है। यहाँ प्राचीन भारत की सीमाओं (अखंड भारत) को दर्शाता वृहद् मानचित्र (म्यूरल) मौजूद है। जिसमें भारत के प्राचीन नगर जैसे हस्तिनापुर, मथुरा, मगध, श्रावस्ती, उज्जयनी, कांचीपुर आदि और ऐतिहासिक क्षेत्र जैसे कुरुक्षेत्र (वृहद् पंजाब, हिमाचल, व हरियाणा) व दक्षिणापथ दर्शाए गए हैं। अब इस मानचित्र को, राष्ट्र संबंधी वैदिक रिचाओं के प्रकाश में दुनिया देखेगी तो "भारत का जन्म 1947 में हुआ", और "भारत राष्ट्र की अवधारणा बिल्कुल नई है" जैसे 'ज्ञान' को कौन मानेगा? चाणक्य, गार्गी, महात्मा गाँधी, डॉ. आंबेडकर, सरदार पटेल की विशाल कांस्य मूर्तियाँ और कोणार्क का रथ चक्र कैसे भाएगा क्योंकि जब आचार्य चाणक्य और सम्राट चन्द्रगुप्त की जोड़ी विमर्श के केंद्र में आएगी, तो जातिवाद की राजनीति और वर्ग संघर्ष का क्या होगा, क्योंकि चाणक्य ने जिस चन्द्रगुप्त को सँवारा वो आज की परिभाषा के अनुसार वंचित वर्ग से आने वाला एक बालक था। जब गार्गी और लोपामुद्रा जैसी महान वेदज्ञ और वेद निर्माता स्त्रियों की चर्चा चलेगी तो "स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था" पर कौन भरोसा करेगा? नए संसद भवन में छः द्वारों पर छः मूर्तियाँ हैं, पूर्व में गरुड़, उत्तर में गज, उत्तर पूर्व में हंस, दक्षिण में अश्व, बाघ, मकर आदि। मयूर और कमल की तर्ज पर निचले व उच्च सदन को रचा गया है। नया संसद भवन प्राचीन भारत की सीमाओं (अखंड भारत) को दर्शाता हुआ वृहद् मानचित्र (म्यूरल) मौजूद है। जिसमें भारत के प्राचीन नगर जैसे हस्तिनापुर, मथुरा, मगध, श्रावस्ती, उज्जयनी, कांचीपुर आदि और ऐतिहासिक क्षेत्र जैसे कुरुक्षेत्र (वृहद् पंजाब, हिमाचल, व हरियाणा) व दक्षिणापथ दर्शाए गए हैं। अब इस मानचित्र को, राष्ट्र संबंधी वैदिक रिचाओं के प्रकाश में दुनिया देखेगी तो "भारत का जन्म 1947 में हुआ", और "भारत राष्ट्र की अवधारणा बिलकुल नई है।" शर्म की बात होनी चाहिए थी पुराने संसद भवन के बाहर लगा वो शिलान्यास पत्थर, जिस पर लिखा हुआ है "यह पत्थर श्रीमान महाराज ड्यूक ऑफ कनॉट साहिब ने 12 फरवरी सन 1921 ई. को स्थापित किया।" इस भवन को बनाया एडवर्ड लुटियन्स और हर्बर्ट बेकर ने। एडवर्ड लुटियन्स का बयान है "भारत के पास अपना कोई वास्तुशास्त्र नहीं रहा है, और यदि पश्चिम से न लाया जाए तो कभी होगा भी नहीं।"

नए संसद भवन को अगले डेढ़ सौ सालों की जरूरतों को ध्यान रखते हुए बनाया गया है। यह पर्यावरण की दृष्टि से बेहतर है। इसके लोकसभा कक्ष में 888 और राज्यसभा में 384 सांसद बैठ सकते हैं। आगामी सदी में सांसदों की बढ़ती संख्या भी यहाँ सहजता से व्यवस्थित हो सकेगी।

विचारणीय था, विशाल सिंधु घाटी सभ्यता (मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, राखीगढ़ी, लोथल), मौर्य, गुप्त, चंदेल, विजयनगर और चोल साम्राज्य जैसी स्थापत्य कला, नगरीय प्रबंधन और एलोरा गुफाओं वाले देश के बारे में अमेरिकन पत्रकार टकर कार्लसन का ये वक्तव्य कि "ब्रिटिश लोगों ने भारत में जो शानदार इमारतें छोड़ी हैं उन्हें आज भी भारतीय उपयोग कर रहे हैं। क्या उस देश ने (अंग्रेजों के बनाए) मुंबई रेलवे स्टेशन जैसी एक भी इमारत बनाई है? नहीं।" कार्लसन ने ये वाक्य अमेरिका की अफगान नीति के बारे में बोलते हुए कहा था। भारत की महान विरासत के प्रति दुनिया में इस अनभिज्ञता के लिए हम जिम्मेदार है। आज भारत की संसद इस खाई को पाटने की दिशा में एक बड़ा कदम है। नई संसद भारत की सनातनता और नए भारत की आकांक्षाओं का प्रतीक है। दुनिया इसे प्रशंसा की दृष्टि से देख रही है। भारत की संसद में भारतीयता नहीं दिखेगी तो और कहाँ दिखेगी? ध्यान रखना चाहिए कि संसद केवल चुने हुए जन प्रतिनिधियों के बैठने का स्थान मात्र नहीं है, ये उस देश की आत्मा और अस्मिता का प्रतीक भी है जिसका ये प्रतिनिधि और देश की सरकार प्रतिनिधित्व करते हैं।

(पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग दिल्ली)

ISSN No. 2581-3528

सच से भागता विपक्ष

हर देश में विपक्ष की भूमिका भी देशहित व सत्य के लिये लड़ने वालों की होती है, परन्तु हमारे देश में विपक्ष सच को स्वीकार ही नही करता बल्कि सच से भागता भी है।अभी केरल की सत्य घटनाओं पर बनी मूवी द केरल स्टोरी को देखने के बाद जहां पूरे देश में फिल्म बनाने वाले की हिम्मत की तारीफ हो रही है।वहीं देश का विपक्ष इस सत्य घटना पर आधारित जनजागरण करने वाली फिल्म का विरोध कर रहा है। तमिलनाडु सरकार ने फिल्म की रिलीज के समय से ही इस पर रोक लगा दी थी।अब बंगाल की ममता सरकार ने भी बंगाल में द केरल स्टोरी फिल्म पर रोक लगाते हुए कहा है कि ये फिल्म नफरत फैलाएगी, शांति बनाने के लिये इसको रोकना जरूरी है। झारखंड व राजस्थान की कांग्रेस सरकार भी इसपर रोक लगाने की तैयारी में है। केरल सरकार भी रोकने को बोल रही है। कांग्रेस झारखंड के विधायक इरफान अंसारी ने कहा है कि समाज से नकारे हुए लोग ही इसको देखने जाएंगे मोहब्बत वाले नही। सपा नेता अब आजमी ने फिल्म निर्माताओं को ही जेल भेजने की बात कही है। राजस्थान में एक युवक द्वारा फिल्म का स्टेटस लगाने पर गला काटने की धमकी मिलने पर सरकार कोई कार्यवाही नही कर रही। इसके अतिरिक्त ओवेशी सहित सभी विपक्षी दलों ने इस फिल्म का किसी न किसी तरह से विरोध किया है।ये कोई पहला मौका नही है जब भारत का विपक्ष सच को नकार रहा है।इससे पहले कश्मीरी अत्याचार को प्रदर्शित करती द कश्मीर फाइल्स फिल्म का भी इन सभी ने ऐसी ही विरोध किया था। इन सभी दलों के विरोध का एकमात्र कारण है मुस्लिम वोट। एक धर्म को खुश करके उसके वोट को पाने के लिए विपक्ष द्वारा की जा रही राजनीति देश के लिये हानिकारक है। कश्मीर फाइल्स व केरल स्टोरी जैसी फिल्में जनजागरण का काम करती है। जिससे ऐसी घटनाएं समाज मे फिर से न दोहराई जाए। विपक्षी दलों को समझना चाहिए कि केरल स्टोरी व कश्मीर फाइल्स में किसी धर्म को गलत नही दर्शाया है बल्कि जो सत्य है उसको समाज के सामने लाने का साहसिक प्रयास किया गया है। बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को डर है कि कहीं बंगाल में हो रहे अत्याचार पर भी फिल्म न बन जाएं। कांग्रेस, सपा, बसपा, टीएमसी सहित समस्त विपक्षी दलों को अपनी राजनीति में परिवर्तन करना चाहिए। केरल स्टोरी व कश्मीर फाइल्स जैसी फिल्मों का विरोध करने वाले विपक्षी हिन्दू धर्म का अपमान करती पीके, पठान जैसी फिल्म व जोधा अकबर जैसी झूठी फिल्मों का भी विरोध करना चाहिये।केरल की घटनाओं पर बनी फिल्म में जो दिखाया है उसको केरल हाईकोर्ट ने भी पिछले समय चिंता जाहिर की थी। राजनीतिक स्वार्थ पूर्ति के लिए अपने स्वाभिमान को खत्म करने वाले विपक्ष को सुधरना होगा नही तो देश की जनता सुधारने के लिए आतुर बैठी है।

– ललित शंकर (गाजियाबाद)

ISSN No. 2581-3528

सेवा, सुशासन और विकास को समर्पित
मोदी सरकार

डॉ. सौरभ मालवीय

भारतीय राजनीति में सबका साथ सबका विकास का नारा देकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत की राजनीति में अपनी विशेष पहचान बनाने में सफल रहे हैं। पार्टी की मजबूती की बात करें, तो नरेंद्र मोदी ने भारतीय जनता पार्टी को राष्ट्रीय स्तर पर खड़ा करने में अद्भुत परिश्रम किया है। पूरे देश में सभी स्तर के चुनावों का संचालन करने में नरेंद्र मोदी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मोदी जी ने भारतीय जनता पार्टी के पितृ पुरुषों की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए पार्टी का विस्तार किया तथा इसका जनाधार बढ़ाया। भारतीय जनता पार्टी आज देश में प्रथम स्थान की पार्टी है। साथ ही यह विश्व में सबसे अधिक सदस्यता वाली राजनीतिक पार्टी के रूप में जानी जाती है। मोदी सरकार ने अपने 9 साल के कार्यकाल में गौरवशाली भारत से आधुनिक भारत तक की यात्रा को मजबूती प्रदान की है।

चरैवेति चरैवेति भाजपा का यात्रा मंत्र : उल्लेखनीय है कि वर्ष 1984 में भाजपा के लोकसभा में केवल दो ही सदस्य थे। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 282 सीटों पर विजय प्राप्त की थी। इस चुनाव की विशेषता यह थी कि तीन दशक के पश्चात किसी पार्टी को पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ था। इसके पश्चात वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 303 सीटों पर विजय प्राप्त की, जो किसी पार्टी द्वारा जीती गईं सर्वाधिक सीटें थीं। नरेंद्र मोदी जब प्रथम बार प्रधानमंत्री बने थे, तब देश के केवल सात राज्यों में भाजपा की सरकार थी। गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं गोवा में भाजपा के मुख्यमंत्री थे, जबकि पंजाब में शिरोमणि अकाली दल एवं आंध्र प्रदेश में टीडीपी के साथ भाजपा सत्ता में भागीदार थी। वर्ष 2018 में भाजपा अपने शीर्ष पर थी। उस समय 21 राज्यों में भाजपा और उसकी सहयोगी पार्टियां सत्ता में थीं। इससे यह बात सिद्ध होती है कि मोदी जी के विराट एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं कुशलता के कारण ही आज भाजपा सत्ता के केंद्र में बनी हुई है। वास्तव में राज्यों में भाजपा को सत्ता में लाने में भी मोदी जी ने अथक परिश्रम किया है। यह बात भी उल्लेख करने के योग्य है कि नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के पश्चात से देश में विपक्ष नाम की वस्तु भी प्रायः लुप्त हो गई। देश में सबसे अधिक समय तक शासन करने वाली कांग्रेस भी सिकुड़ती गई। देश ही नहीं, अपितु उन सभी राज्यों की यही स्थिति है जहां भाजपा सत्ता में है। कोई भी पार्टी भाजपा के समक्ष खड़ा होने में सक्षम प्रतीत नहीं हो रही है।

ISSN No. 2581-3528

मोदी जी के सुशासन एवं कौशल्य के समक्ष सभी पार्टियां धराशायी हुई पड़ी हैं। विपक्ष के पास ऐसा कोई मुद्दा नहीं है, जिससे वह सत्ताधारी पार्टी को घेर सके। वामपंथी पार्टियां भी लुप्त सी हो चुकी हैं।

ऐतिहासिक निर्णय लेने वाले प्रधानमंत्री : नरेंद्र मोदी देश के ऐसे प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने बिना किसी भय के ऐतिहासिक निर्णय लेकर सबको चकित कर दिया। यह उनके निर्भीक व्यक्तित्व का ही प्रमाण है कि उनकी सरकार ने अनुच्छेद-370 और अनुच्छेद-35A को निरस्त कर दिया। इसके कारण जम्मू और कश्मीर का देश के शेष भागों के साथ पूर्ण एकीकरण हो गया। लगभग 70 वर्षों तक इस अस्थायी अनुच्छेद ने जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के लोगों को उनके मूलभूत अधिकारों से वंचित कर दिया था। ये दोनों अनुच्छेद क्षेत्र के विकास में बड़ी बाधा थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा था कि अनुच्छेद-370 ने जम्मू-कश्मीर को दशकों तक केवल आतंकवाद, अलगाववाद, भ्रष्टाचार और परिवारवाद दिया। यह अनुच्छेद हटने के पश्चात पूर्ण विश्वास है कि केंद्र शासित जम्मू-कश्मीर और लद्दाख विकास की राह पर तेजी से आगे बढ़ेंगे।

मोदी की राम मंदिर निर्माण में भूमिका : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भगवान श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या में राम मंदिर निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने अयोध्या में राम जन्मभूमि पर राम मंदिर का शिलान्यास किया था। राम मंदिर के निर्माण के लिए भूमि पूजन के पश्चात यह प्रथम अवसर था, जब मोदी जी अयोध्या आए थे। उन्होंने राम मंदिर के निर्माण कार्यों में विशेष रुचि ली तथा कार्यों का निरीक्षण भी किया। वह कार्य की प्रगति की समय-समय पर जानकारी लेते रहे। उल्लेखनीय है कि नरेंद्र मोदी ने लालकृष्ण आडवाणी द्वारा प्रारम्भ की गई रथयात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने गुजरात में रथ यात्रा का नेतृत्व किया था। उन्होंने राम जन्मभूमि आन्दोलन के समय गांव-गांव घूमकर आन्दोलन के लिए समर्थन जुटाया था। उन्होंने हस्ताक्षर अभियान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनके प्रयासों के कारण ही अयोध्या में राम मन्दिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ हो सका।

धर्म-संस्कृति का संरक्षण एवं प्रोत्साहन : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व की ऐतिहासिक धरोहरों के सौन्दर्यीकरण का संकलप लिया है। इस कड़ी में उन्होंने भगवान शंकर की नगरी काशी को भव्यता प्रदान करने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कहना है कि काशी के बाबा विश्वनाथ मंदिर में श्रद्धालुओं का स्वागत इस प्रकार हो कि वे बार-बार यहां आने के लिए उत्साहित हों तथा वे अन्य लोगों को भी प्रोत्साहित करें। उन्होंने काशी में बाबा विश्वनाथ मंदिर कॉरिडोर की नींव रखकर इसका कार्य प्रारंभ करवाया। वे देशभर के ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्त्व वाले स्थलों का जीर्णोद्धार करवा रहे हैं तथा इसके साथ ही धार्मिक स्थलों के विकास एवं सौन्दर्यीकरण पर विशेष ध्यान दे रहे है। केदारनाथ का पुनर्निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है। बद्रीनाथ में भी नए मास्टर प्लान के अंतर्गत कार्य चल रहा है। ये धार्मिक स्थल हमारे देश की गौरवशाली संस्कृति के प्रतीक हैं। ये भविष्य में हमारी संस्कृति को जीवित रखने का माध्यम हैं, ये संस्कृति के संवाहक भी हैं।

जनकल्याण के कार्य : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश के अंतिम व्यक्ति तक के जीवन को सुखी एवं समृद्ध देखने के अभिलाषी हैं। इसके लिए वे निरंतर प्रयासरत हैं। उनके शासन में देश ने प्रायः सभी क्षेत्रों में उन्नति की है। कृषि, उद्योग, रोजगार, आवास, परिवहन, विद्युत, पेयजल, शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, सुरक्षा व्यवस्था, धर्म, संस्कृति एवं पर्यावरण आदि क्षेत्रों में मोदी सरकार ने सराहनीय एवं प्रशंसनीय कार्य किए हैं। छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। वृद्धजन, विधवा एवं दिव्यांगजन को पेंशन के रूप में आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। सरकार द्वारा अनाथ बच्चों के भरण-पोषण की भी व्यवस्था की गई है। जिन परिवारों में कोई कमाने वाला व्यक्ति नहीं है, सरकार उन्हें भी वित्तीय सहायता उपलब्ध करवा रही है। निर्धन परिवार की लड़कियों एवं दिव्यांगजन के विवाह लिए अनुदान प्रदान किया जा रहा है। निराश्रित गौवंश के संरक्षण पर भी सरकार विशेष ध्यान दे रही है। सरकार प्रदूषण नियंत्रण के क्षेत्र में भी कार्य कर रही है, ताकि लोगों को स्वच्छ वातावरण मिल सके। स्वच्छता पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। भयावह कोविड महामारी के समय देश के लगभग 80 करोड़ लोगों को राशन उपलब्ध करवाना, पीड़ितों को चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाना तथा सभी देशवासियों को कोविड से सुरक्षित रखने के लिए टीकाकरण अभियान चलाना आदि ऐसे कार्य हैं, जो मोदी सरकार की सफलता को दर्शाते हैं।

जनसंपर्क अभियान : भाजपा द्वारा मोदी सरकार की उपलब्धियों से जनता को परिचित करवाने के लिए 30 मई से 30 जून तक जनसंपर्क अभियान चलाया जा रहा है। जनसंपर्क अभियान के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। पार्टी ने कार्यकर्ताओं से अपील की है कि वे इसमें बढ़ चढ़कर भाग लें।

इस बात में कोई दो मत नहीं है कि नरेंद्र मोदी के शासन काल में भारतीय संस्कृति को उसका खोया हुआ गौरव वापस मिल रहा है। अपने 9 साल के कार्यकाल में मोदी सरकार ने विश्व में देश का नाम बढ़ाया है। देश ही नहीं, अपितु वैश्विक स्तर पर मोदी जी के कार्यों की सराहना हो रही है।

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक हैं)

ISSN No. 2581-3528

1857 में सीकरी का बलिदान

अशोक चौधरी

किला परिक्षत गढ़ के राजा जेत सिंह नागर की मृत्यु (सन् 1790) के पश्चात नेन सिंह नागर राजा बने, तब नेन सिंह नागर ने अपने 6 भाईयों में से एक भाई खुशहाल सिंह को सीकरी में गढ़ी बनाकर क्षेत्र की व्यवस्था के लिए गढी में नियुक्त कर दिया था।

सीकरी खुर्द मेरठ से 13 मील दूर, दिल्ली जाने वाले राज मार्ग पर मोदीनगर से सटा हुआ एक गाँव है। 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में इस गाँव ने अत्यन्त सक्रिय भूमिका अदा की है। 10 मई 1857 को देशी सैनिक ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सरकार के विरूद्ध संघर्ष की शुरूआत कर दिल्ली कूच कर गये थे। जब मेरठ के क्रान्तिकारी सैनिक मौहिउद्दीनपुर होते हुए बेगमाबाद (वर्तमान मोदीनगर) पहुंचे तो सीकरी खुर्द के लोगों ने इनका भारी स्वागत–सत्कार किया। इस गाँव के करीब 750 नौजवान सैनिकों की टोली में शामिल हो गये और दिल्ली रवाना हो गये। अगले ही दिन इस जत्थे की, दिल्ली के तत्कालीन खूनी दरवाजे पर अंग्रेजी फौज से मुठभेड़ हो गई। जिसमें अनेक नौजवान क्रान्तिकारी शहीद हो गए।

1857 के इस स्वतन्त्रता समर के प्रति अपने उत्साह और समर्पण के कारण सीकरी खुर्द क्रान्तिकारियों का एक महत्वपूर्ण ठिकाना बन गया। गाँव के बीचों–बीच स्थित एक किलेनुमा मिट्टी की दोमंजिला हवेली को क्रान्तिकारियों ने तहसील का स्वरूप प्रदान किया। यह हवेली सिब्बा गुर्जर की थी, कुछ विद्वानों का मत है कि यह हवेली दुर्गा गुर्जर नामक व्यक्ति की थी। सम्भवतः सिब्बा/दुर्गा पूठी के राव कदम सिंह की तरह राजा नेन सिंह नागर के भाई खुशहाल सिंह के वंशज थे। जो अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण स्वत ही क्रान्तिकारियों के नेता थे। आसापास के अनेक गाँवों के क्रान्तिकारी सीकरी खुर्द में इकट्ठा होने लगे। मेरठ के कुछ क्रान्तिकारी सैनिक भी इनके साथ थे। इस कारण यह दोमंजिला हवेली क्रान्तिकारी गतिविधियों का केन्द्र बन गयी।

सीकरी खुर्द के सिब्बा/दुर्गा गुर्जर से लालकुर्ती मेरठ में रहने वाले बूचड़वाले जमींदार ने अंग्रेजों की ओर से स्वयं जाकर सिब्बाध्दुर्गा गुर्जर मुकद्दम से बातचीत की। उसने सिब्बाध्दुर्गा गुर्जर को, अंग्रेजों के पक्ष में करने के लिए, लालच देते हुए कहा कि 'मुकद्दम जितने इलाके की ओर तुम उँगली उठाओगे, मैं वो तुम्हे दिलवा दूँगा तथा जो जमीन तुम्हारे पास है उसका लगान भी माफ करवा दिया जायेगा'। लेकिन सिब्बा/दुर्गा गुर्जर ने जमींदार की बात नहीं मानी। अब सीकरी खुर्द के गुर्जर खुलेआम अंग्रेजों के विरूद्ध हो गये।

क्रान्तिकारियों ने आसापास के क्षेत्रों में राजस्व वसूल कर क्रान्तिकारी सरकार के प्रमुख, सम्राट बहादुरशाह जफर को भेजने का निश्चय किया। व्यवस्था को लागू करने के लिए सीकरी के क्रान्तिकारियों ने अंग्रेज परस्त ग्राम काजिमपुर पर हमला बोल 7 गद्दारों को मौत के घाट उतार दिया। अंग्रेज परस्तों को सबक सिखाने का सिलसिला यहीं समाप्त नहीं हुआ। सीकरी खुर्द में स्थित इन क्रान्तिकारियों ने बेगमाबाद (वर्तमान मोदीनगर) और आसापास के अंग्रेज समर्थक गद्दारों पर बड़े हमले की योजना बनाई। बेगमाबाद कस्बा सीकरी खुर्द से मात्र दो मील दूर था। वहाँ अंग्रेजों की एक पुलिस चौकी थी, जिस कारण सीकरी खुर्द में बना क्रान्तिकारियों का ठिकाना सुरक्षित नहीं था। इस बीच बेगमाबाद के अंग्रेज परस्तों ने गाजियबााद और दिल्ली के बीच हिण्डन नदी के पुल को तोड़ने का प्रयास किया। वास्तव में वो दिल्ली की क्रान्तिकारी सरकार और पश्चिम उत्तर प्रदेश में उसके नुमाईन्दे बुलन्दशहर के बागी नवाब वलिदाद खान के बीच के सम्पर्क माध्यम, इस पुल को समाप्त करना चाहते थे। जिससे कि वलिदाद खान को सहायता हीन कर हराया जा सके। इस घटना ने सीकरी खुर्द में स्थित क्रान्तिकारियों की क्रोधाग्नि में घी का काम किया और उन्होंने 8 जुलाई सन् 1857 को बेगमाबाद पर हमला कर

ISSN No. 2581-3528

दिया। सबसे पहले बेगमाबाद में स्थित पुलिस चौकी को नेस्तनाबूत कर अंग्रेज परस्त पुलिस को मार भगाया। इस हमले की सूचना प्राप्त होते ही आसपास के क्षेत्र में स्थित अंग्रेज समर्थक काफी बड़ी संख्या में बेगमाबाद में एकत्रित हो गये। प्रतिक्रिया स्वरूप सीकरी खुर्द, नंगला, दौसा, डीलना, चुड़ियाला और अन्य गाँवों के, गुर्जर क्रान्तिकारी इनसे भी बड़ी संख्या में इकट्ठा हो गए। आमने सामने की इस लड़ाई में क्रान्तिकारियों ने सैकड़ों गद्दारों को मार डाला, चन्द गद्दार बड़ी मुश्किल से जान बचाकर भाग सके। क्रान्तिकारियों ने इन अंग्रेज परस्तों का धनमाल जब्त कर करबे को आग लगा दी।

बेगमाबाद की इस घटना की खबर जैसे ही मेरठ स्थित अंग्रेज अधिकारियों को मिली, तो उनके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गयी। अंग्रेजी खाकी रिसाले ने रात को दो बजे ही घटना स्थल के लिए कूच कर दिया। मेरठ का कलेक्टर डनलप स्वयं रिसाले की कमान संभाले हुए था, उसके अतिरिक्त मेजर विलियम, कैप्टन डीवायली एवं कैप्टन तिरहट रिसाले के साथ थे। खाकी रिसाला अत्याधुनिक हथियारों – मरकटों, कारबाईनों और तोपों से लैस था। भौर में जब रिसाला बेगमाबाद पहुँचा तो बूंदा–बांदी होने लगी, जो पूरे दिन चलती रही। बाजार में आग अभी भी सुलग रही थी, अंग्रेजी पुलिस चौकी और डाक बंगला वीरान पड़े थे। उनकी दीवारें आग से काली पड़ चुकी थी और फर्श जगह–जगह से खुदा पड़ा था। करबे से भागे हुए कुछ लोग यहाँ–वहाँ भटक रहे थे।

अपने समर्थकों की ऐसी दुर्गति देख अंग्रेज अधिकारी अवाक रह गये। यहाँ एक पल भी बिना रूके, खाकी रिसाले को ले, सीधे सीकरी खुर्द पहुँच गये और पूरे गाँव का घेरा डाल दिया। अंग्रेजों के आने की खबर से क्रान्तिकारी भी लड़ने के लिए तैयार हो गये। शीघ्र ही वो तलवार और भाले लेकर गाँव की सीमा पर इकट्ठा हो गये। भारतीयों ने अंग्रेजों को ललकार कर उन पर हमला बोल दिया। खाकी रिसाले ने कारबाईनों से गोलियाँ बरसा दी, जिस पर क्रान्तिकारियों ने पीछे हटकर आड़ में मोर्चा सम्भाल लिया। क्रान्तिकारियों के पास एक पुरानी तोप थी जो बारिश के कारण समय पर दगा दे गयी, वही अंग्रेजी तोपखाने ने कहर बरपा दिया और अंग्रेज क्रान्तिकारियों की प्रथम रक्षा पंक्ति को भेदने में में कामयाब हो गये। गाँव की सीमा पर ही 30 क्रान्तिकारी शहीद हो गये।

अन्ततः क्रान्तिकारियों ने सीकरी खुर्द के बीचो बीच स्थित किलेनुमा दोमजिला हवेली में मोर्चा लगा लिया। क्रान्तिकारियों ने यहाँ अपने शौर्य का ऐसा प्रदर्शन किया कि अंग्रेजों को भी उनके साहस और बलिदान का लोहा मानना पड़ा। कैप्टल डीवयली के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना की टुकड़ी ने हवेली के मुख्य दरवाजे को तोप से उड़ाने का प्रयास किया। क्रान्तिकारियों के जवाबी हमले में कैप्टन डीवायली की गर्दन में गोली लग गयी और वह बुरी तरह जख्मी हो गया। इस बीच कैप्टन तिरहट के नेतृत्व वाली सैनिक टुकड़ी हवेली की दीवार से चढ़कर छत पर पहुँचने में कामयाब हो गयी। हवेली की छत पर पहुँच कर इस अंग्रेज टुकड़ी में नीचे आंगन में मोर्चा ले रहे क्रान्तिकारियों पर गोलियों की बरसात कर दी। तब तक हवेली का मुख्य द्वारा भी टूट गया, भारतीय क्रान्तिकारी बीच में फंस कर रह गये। हवेली के प्रांगण में 70 क्रान्तिकारी लड़ते–लड़ते शहीद हो गये।

इनके अतिरिक्त गाँव के घरों और गलियों में अंग्रेजों से लड़ते हुए 70 लोग और शहीद हो गये। अंग्रेजों ने अशक्त बूढों और औरतों को भी नहीं छोड़ा। कहते हैं कि सीकरी खुर्द स्थित महामाया देवी के मंदिर के निकट एक तहखाने में गाँव के अनेक वृद्ध एवं बच्चे छिपे हुए थे तथा गाँव के पास एक खेत में सूखी पुराल व लकड़ियों में गाँव की महिलाएँ छिपी हुई थीं। जब खाकी रिसाला सीकरी खुर्द से वापिस जाने ही वाला था कि तभी किसी गद्दार ने यह बात अंग्रेज अफसरों को बता दी। अंग्रेजों ने तहखाने से निकाल कर 30 व्यक्तियों को गोली मार दी और बाकी लोगों को मन्दिर के पास खड़े वट वृक्ष पर फांसी पर लटका दिया। गाँव की स्त्रियों ने अपने सतीत्व को बचाने के लिए खेत के पुराल में आग लगा कर जौहर कर लिया। आज भी इस खेत को सतियों का खेत कहते हैं।

मेरठ के तत्कालीन कमिश्नर एफ. विलियमस् की शासन को भेजी रिपोर्ट के अनुसार गुर्जर बाहुल्य गाँव सीकरी खुर्द का संघर्ष पूरे पाँच घंटे चला और इसमें 170 क्रान्तिकारी शहीद हुए। ग्राम में स्थित महामाया देवी का मन्दिर, वहाँ खड़ा वट वृक्ष और सतियों का खेत आज भी सीकरी के शहीदों की कथा की गवाही दे रहे हैं। सीकरी खुर्द के सभी बलिदानियों को शत–शत नमन।

सन्दर्भ :–

1. डा सुशील भाटी–सीकरी की शहादत
2. विधनेष कुमार मुदित कुमार, 1857 का विप्लव, मेरठ, 2007 पृष्ठ संख्या 110
3. डनलप, सर्विस एण्ड ऐडवेनचर ऑफ खाकी रिसाला इन इण्डिया 1857–58, पृष्ठ संख्या 71
5 . वही, डनलप, पृष्ठ संख्या 71
6. (क) ई0 बी0 जोशी, मेरठ डिस्ट्रिक्ट गजेटेयर, पृष्ठ संख्या 4

(ख) वही, डनलप, पृष्ठ संख्या 71–72

7. वही, डनलप, पृष्ठ संख्या 72–73
8. वही, डनलप, पृष्ठ संख्या 73–74
9. एफ विलयम्स (कमिश्नर), नैरेटिव ऑफ इवेंटस अटैण्डिंग दी आउटब्रेक आफ डिस्टर बैंसिस एण्ड दी रिस्टोरेशन ऑफ अथारिटी इन दी डिस्ट्रिक्ट मेरठ इन 1857, 58 (म्यूटिनी नैरेटिव), पृष्ठ संख्या 263
10. (क) वही, डनलप, पृष्ठ 74

(ख) वही, एफ विलयम्स, पृष्ठ 264

11. वही, एफ विलयम्स पृष्ठ 264
12. वही, एफ विलयम्स, पृष्ठ 264

ISSN No. 2581-3528

धारा 370 हटने के बाद जम्मू एवं कश्मीर बन रहा है भारत में निवेश का नया केंद्र

प्रहलाद सबनानी

ऐसा कहा जाता है कि जम्मू एवं कश्मीर में धारा 370 लागू करना तत्कालीन नेहरू सरकार की सबसे बड़ी राजनैतिक भूल थी, क्योंकि इसके कारण जम्मू एवं कश्मीर के नागरिकों का अत्यधिक नुकसान हुआ है। दरअसल पूरे देश में नागरिकों के हितार्थ भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही कई योजनाओं का लाभ धारा 370 के कारण जम्मू कश्मीर एवं लद्दाख के नागरिकों को नहीं मिल पा रहा था। साथ ही, इन क्षेत्रों का विकास भी नहीं हो पा रहा था क्योंकि अत्यधिक आतंकवाद के कारण इस क्षेत्र में कोई भी उद्योगपति अपना निवेश करने को तैयार ही नहीं होता था।

धारा 370 को लागू करने के कारण जम्मू एवं कश्मीर के नागरिकों को आर्थिक नुकसान के अलावा राजनैतिक, सामाजिक एवं अन्य क्षेत्रों में पूरे भारत को ही भारी परेशानी का सामना करना पड़ा है। केंद्र सरकार को रक्षा, विदेश एवं संचार जैसे कुछ क्षेत्रों को छोड़कर शेष समस्त क्षेत्रों के लिए भारत सरकार के कानून जम्मू कश्मीर में लागू करने के लिए राज्य सरकार की अनुमति लेना आवश्यक होता था। अतः भारत सरकार के कानून जम्मू कश्मीर में लागू नहीं होते थे। इसका परिणाम यह निकलता था कि भारत के अन्य राज्यों से कोई भी भारतीय नागरिक जम्मू कश्मीर की सीमा के अंदर जमीन या सम्पत्ति नहीं खरीद सकता था। जम्मू कश्मीर के लिए भारतीय तिरंगा के अलावा एक अलग राष्ट्रीय ध्वज भी होता था, इसलिए वहां के नागरिकों द्वारा भारतीय तिरंगा के सम्मान नहीं करने पर उन पर कोई अपराधिक मामला दर्ज नहीं हो सकता था। यहां तक कि जम्मू और कश्मीर के सम्बंध में भारत की सुप्रीम कोर्ट द्वारा यदि कोई आदेश दिया जाता था, तो वहां के लिए यह जरूरी नहीं है कि वे इसका पालन करें। जम्मू और कश्मीर की कोई महिला यदि भारत के किसी अन्य राज्य के किसी व्यक्ति से शादी कर लेती थी, तो उस महिला से उसके कश्मीरी होने का अधिकार छिन जाता था। इसके विपरीत यदि कोई कश्मीरी महिला पाकिस्तान में रहने वाले किसी व्यक्ति से निकाह करती थी, तो उसकी कश्मीरी नागरिकता पर कोई असर नहीं होता था। साथ ही, कोई पाकिस्तानी नागरिक यदि कश्मीरी लड़की से शादी करता था और फिर कश्मीर में आकर रहने लगता था तो उस व्यक्ति को भारतीय नागरिकता भी प्राप्त हो जाती थी। यह किस प्रकार के नियम बनाए गए थे जिनके अनुसार एक भारतीय नागरिक जम्मू कश्मीर में नहीं बस सकता था परंतु एक पाकिस्तानी नागरिक यहां बस सकता था और आतंकवाद फैला सकता था।

कुल मिलाकर धारा 370 के चलते, जम्मू एवं कश्मीर के नागरिकों को लाभ के स्थान पर नुकसान ही अधिक उठाना पड़ा है। परंतु, केंद्र में मोदी सरकार के आने के बाद इस क्षेत्र के नागरिकों को देश में लागू की जा रही विभिन्न योजनाओं का लाभ पहुंचाने, इस क्षेत्र के आर्थिक विकास को गति देने एवं आतंकवाद को समूल नष्ट करने के उद्देश्य से दिनांक 5 अगस्त 2019 को भारत सरकार ने जम्मू एवं कश्मीर को खास दर्जा देने वाली धारा 370 को कानूनी रूप से खत्म कर दिया था। केंद्र सरकार का यह फैसला सचमुच में बहुत दूरदर्शी साबित हुआ है क्योंकि धारा 370 को हटाए जाने के बाद से जम्मू एवं कश्मीर में कई बदलाव दृष्टिगोचर हैं। अब केंद्र के समस्त कानूनों एवं अन्य कई आर्थिक योजनाओं को वहां लागू कर दिया गया है इससे आम नागरिकों को बहुत सुविधा एवं लाभ हुआ है। आतंकी घटनाओं में भारी कमी आई है। आतंकवादियों की कमर तोड़ दी गई है। हजारों की संख्या में स्थानीय नागरिकों को सरकारी नौकरियां प्रदान की गई हैं। देश का यह सबसे खूबसूरत भाग धारा 370 को लागू करने के बाद से पूरी तरह से भारत से जुड़ नहीं पाया था परंतु अब धारा 370 हटाए जाने के बाद यह क्षेत्र भी सही अर्थों में भारत के साथ जुड़ गया है।

धारा 370 को हटाए जाने के बाद से जम्मू कश्मीर में जिस तरह आधारभूत संरचना का विकास हो रहा है, कनेक्टिविटी बढ़ रही है, उससे राज्य में पर्यटन गतिविधियों का विस्तार हुआ है और केलेंडर वर्ष 2022 में रिकार्ड वृद्धि के साथ 26 लाख से अधिक पर्यटक वहां पहुंचे हैं। भारत के राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से वर्ष 2019 तक जम्मू कश्मीर में तकरीबन 14,700 करोड़ रुपए का निवेश हो पाया था, जबकि पिछले केवल 3 वर्षों में यह चार गुना बढ़कर 56,000 करोड़ रुपए से अधिक का हो गया है। स्वास्थ्य से जुड़ी

ISSN No. 2581-3528

आधारभूत संरचना का भी तेजी से विकास हो रहा है। 2 नए एम्स, 7 नए मेडिकल कॉलेज, 2 स्टेट कैंसर इंस्टीट्यूट और 15 नर्सिंग कॉलेज खुलने जा रहे हैं। इस सबसे स्थानीय नागरिकों के लिए रोजगार के नए अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है।

हाल ही में पिछले दिनों श्रीनगर के सेमपोरा में विदेशी निवेश से निर्मित होने वाले 250 करोड़ रुपये की लागत के एक मॉल की आधारशिला उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा ने रखी। यह जम्मू एवं कश्मीर में विदेशी पूंजी से बनने वाला प्रदेश का पहला मॉल होगा, जिसे 2026 तक पूरा किए जाने की सम्भावना है। दुबई का एम्मार समूह इसका निर्माण कर रहा है। इसके अलावा जम्मू और श्रीनगर में डेढ़ सौ–डेढ़ सौ करोड़ रुपये की लागत वाले एक–एक आईटी टावर का विनिर्माण भी एम्मार समूह कर रहा है। यह इसका प्रमाण है कि अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद की बदली परिस्थितियों में जम्मू–कश्मीर में भी विदेशी निवेश आ रहा है। उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा के मुताबिक, नई औद्योगिक नीति आने के 22 महीनों में 5,000 से अधिक देसी व विदेशी कंपनियों के निवेश प्रस्ताव मिले हैं। साथ ही, श्री सिन्हा ने इस अवसर पर यह घोषणा भी की कि निवेश संबंधी प्रस्ताव आने के 15 दिन के अंदर जमीन उपलब्ध कराई जाएगी। देश के किसी भी प्रदेश में ऐसी घोषणा शायद ही पूर्व में की गई हो।

जम्मू एवं कश्मीर की अर्थव्यवस्था अभी तक कृषि और पर्यटन पर ही आधारित रही है। आतंकवाद के चलते राज्य में औद्योगिक विकास के बारे में तो कल्पना करना ही सम्भव नहीं था। परंतु अब विभिन्न कंपनियां पैकेजिंग, कोल्ड स्टोरेज, रसद, खाद्य प्रसंस्करण, फार्मास्यूटिकल, चिकित्सा, पर्यटन और शिक्षा आदि क्षेत्र में भी अपनी रुचि दिखा रही हैं और निवेश कर रही हैं।

यह सच है कि जम्मू एवं कश्मीर में धारा 370 हटाए जाने के बाद से स्थानीय नागरिकों में उत्साह के माहौल ने अपनी जगह बना ली है, जो कि पहले आतंकवाद के माहौल में रहने को मजबूर थे। इस क्षेत्र में नित नए उद्योग आरंभ हो रहे हैं। यह प्रदेश के बदलते आर्थिक, वित्तीय व कारोबारी स्थिति का ही प्रमाण है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कुल 38,000 करोड़ रुपए लागत की विभिन्न परियोजनाओं का शिलान्यास किया है। जम्मू एवं कश्मीर राज्य के लिए अगले कुछ वर्षों में कुल 75,000 करोड़ रुपये के निवेश का लक्ष्य रखा गया है। साथ ही, जम्मू एवं कश्मीर में जी–20 समूह की बैठक का आयोजन, भारत की अध्यक्षता में, किया जा रहा है। इस बैठक में विकसित देशों सहित विभिन्न देशों के उच्चस्तरीय नेता एवं अधिकारी भाग लेंगे। वस्तुतः जम्मू कश्मीर को लेकर केंद्र सरकार पूर्व की सभी सरकारों से अलग दृष्टिकोण से काम कर रही है। आर्थिक गतिविधियों द्वारा प्रदेश का माहौल बदलना इनमें प्रमुख है। उम्मीद की जा रही है कि आने वाले समय में जम्मू एवं कश्मीर भी देश के अन्य राज्यों के समानांतर आर्थिक विकास की पटरी पर दौड़ता दिखाई देगा।

(लेखक भारतीय स्टेट बैंक के उप महाप्रबंधक पद से सेवा निवृत्त हैं)

ISSN No. 2581-3528

दीनदयाल जी के 'एकात्म मानवदर्शन' की दुनिया को जरुरत

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

जब हम 'अमृत काल' में प्रवेश कर चुके हैं और वास्तविक अर्थों में 'विश्वगुरु' बनने का प्रयास कर रहे हैं, तकनीकी प्रगति के बाद भी, पूरी दुनिया अराजकता में है। शांति और आनंद सबसे कठिन कार्य बन गए हैं, और जीवन में शारीरिक, मानसिक और सामाजिक परेशानियो के साथ–साथ देशों के बीच विवाद और पर्यावरण संबंधी मुद्दे हैं जो हर देश को पटरी से उतार चुके हैं। यह भारत के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी की शिक्षाओं को दुनिया को प्रदर्शित करने का समय है। 'एकात्म मानव दर्शन' विचार मानवता के लिए एक शांतिपूर्ण, आनंदमय और नैतिक जीवन जीने का मार्ग है।

दीनदयाल उपाध्यायजी की सोच स्वतंत्रता के बाद के संदर्भ में भविष्य के भारत की कल्पना करने के एकीकृत और बहुआयामी प्रयासों के विचारो को प्रभावी ढंग से रखती है। उनका 'एकात्म मानव दर्शन' हमें भारतीय चिंतन की सनातन परंपरा के सार्वभौमिक मूल्यों से प्रभावित दर्शन का एक सुव्यवस्थित और सुविचारित कोष प्रदान करता है। दीनदयाल उपाध्याय जी अध्यात्म, नैतिकता और विभिन्न दृष्टिकोणों की स्वीकार्यता की सर्वकालिक सांस्कृतिक और नैतिक परंपरा को आधुनिक लोकतांत्रिक उपकरणों के साथ जोड़ने पर बल देते हैं। वह शास्त्रीय आधार के साथ समकालीन रूप में संवाद, चर्चा, बहस और उदबोधन के मूल सिद्धांतों की पेशकश करने पर भी बल देते है।

'राष्ट्र और भारत माता शब्दों के सही अर्थ को समझना' : 'जब लोगों का एक समूह एक लक्ष्य, एक आदर्श, एक मिशन के साथ रहता है और भूमि के एक विशिष्ट भाग को मातृभूमि मानता है, तो समूह एक राष्ट्र का गठन करता है। जब तक आदर्श और मातृभूमि दोनों न हों, तब तक कोई राष्ट्र नहीं है।'

नतीजतन, भारत शब्द केवल एक क्षेत्र को दर्शाता है, जबकि 'भारत माता' एक विशेष, एकजुट जागरूकता को दर्शाता है जो भूमि और रहने वालों के बीच एक बंधन बनाता है, और इस संदर्भ में, मातृभूमि या जन्मभूमि की अवधारणा सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट है। भारत राष्ट्र की कल्पना एक माँ के रूप में की जाती है, न कि एक साधारण भू–भाग के रूप में, बल्कि एक जीवित इकाई के रूप में जो अपने पुत्रों और पुत्रियों के माध्यम से काम करती है और उनके माध्यम से अपने मिशन को पूरा करती है। यह अवधारणा निवासियों के प्यार और भूमि के प्रति वफादारी के उच्चतम आदर्श को मां के रूप में व्यक्त करती है। दीनदयाल जी के अनुसार, 'एकजन' की अवधारणा, एक व्यक्ति, एक राष्ट्र, उस भूमि के साथ लोगों की एकजुटता का प्रतीक है जिसमें वे रहते हैं। उनके लिए, 'एकजन' एक जीवित जीव है।

मानव और मानवता का विकास, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के अनुसार : अपने 'अर्थयम' में, वह कृषि और उद्योग दोनों के विकास की वकालत करते हैं। दीनदयाल उद्योग की स्थापना और समुचित विकास के लिए सात 'एम'(M) के महत्व पर जोर देते हैं– आदमी (Man), सामग्री (Material), धन (Money), प्रेरक शक्ति (Motive Power), प्रबंधन (Management), बाजार (Market) और यंत्र (Machine)। वह एक एकीकृत स्वदेशी विकास मॉडल बनाते है, जो अपनी अनूठी विशेषता के कारण भारतीय समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। वह न केवल मनुष्य की भौतिक उन्नति चाहते है, बल्कि उसकी आध्यात्मिक उन्नति भी चाहते है। दीन दयाल उपाध्याय जी अपनी 'एकात्म मानव दर्शन' विचारधारा के साथ भारतीय सोच को सुधारने के लिए श्रेय के हकदार हैं, जो मनुष्य के कुल सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक विकास की आकांक्षा रखते है। उनकी 'एकात्म मानव दर्शन' विचारधारा भी बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक व्यक्ति, समाज, मानव जाति और पूरे पृथ्वी के हितों को संतुलित करने का प्रयास करती है। दीनदयाल जी का मानना है कि मनुष्य एक तत्व है। 'शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा – ये चार एक व्यक्ति को बनाते हैं। क्योंकि वे एकीकृत और आपस में जुड़े हुए हैं, इन चार तत्वों को अलग–अलग नहीं देखा जा सकता है। मनुष्य की उन्नति शरीर में निवास करने वाली संस्थाओं के संतुलित विकास पर जोर देती है। वह मनुष्य के विकास के लिए शरीर के महत्व पर जोर देते है और इस बात पर जोर देते है कि आत्म–साक्षात्कार के लिए शारीरिक मांगों को पूरा करना आवश्यक है।

भारतीय मान्यता के अनुसार, मानव शरीर पांच तत्वों से बना है– पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। व्यक्तियों के लिए सभी उपभोज्य और आवश्यक वस्तुएँ और सामग्रियाँ पृथ्वी से ही प्राप्त होती हैं। मानव शरीर की अंतिम मंजिल भी धरती ही है। अमृत और विष दोनों मिट्टी से प्राप्त होते है, जैसे जल, अग्नि और जीवन। परिणामस्वरूप, पृथ्वी को 'रत्न गर्भा वसुंधरा' के रूप में जाना जाता है, यही कारण है कि भारतीय धर्म में पृथ्वी को माता कहा जाता है। वैदिक स्तोत्र के अनुसार 'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः' जिस तरह से हम प्रकृति माता को देखते हैं, वह मौलिक रूप से अन्य जीवित और निर्जीव प्रजातियों के प्रति हमारे व्यवहार और दृष्टिकोण को बदल देती है।

व्यक्तियों और समाजों के साथ–साथ व्यक्तियों और पृथ्वी, सभी ब्रह्माण्ड का हिस्सा हैं। व्यक्ति और ब्रह्मांड की अखंडता

ISSN No. 2581-3528

अनिवार्य रूप से व्यक्ति और सर्वोच्च की अखंडता का मार्ग प्रशस्त करेगी। इन तत्वों के बीच इस प्राकृतिक अखंडता को ध्यान में रखते हुए, पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी सामाजिक जीवन का विश्लेषण करने पर एक पूरी तरह से अलग दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

यद्यपि यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि दीनदयालजी ने स्वयं तर्क दिया कि न तो जो भारत में उत्पन्न हुई हर चीज को अस्वीकार करते हैं और न ही वे जो भारत में उत्पन्न हुई हर चीज को स्वीकार करते हैं, न ही वे जो यह तर्क देते हैं कि हमें अतीत में लौट जाना चाहिए और वहां से फिर से शुरू करना चाहिए, स्वीकार नहीं किया जाएगा। ये दोनों दृष्टिकोण आंशिक सत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने तर्क दिया कि अलग अलग समय मे और प्रत्येक स्थान में बीमारी के अनुरूप एक इलाज विकसित किया जाना चाहिए। नतीजतन, हमारे देश में विदेशी मुद्दों को पूरी तरह से गले लगाने के लिए यह न तो व्यावहारिक है और न ही विवेकपूर्ण है। यह आपको सुख और समृद्धि प्राप्त करने में मदद नहीं करेगा। वह आगे टिप्पणी करते हैं, 'हमें शाश्वत सिद्धांतों और सत्य के संदर्भ में संपूर्ण मानवता के ज्ञान और लाभ को अवशोषित करना चाहिए।' जो हमारे बीच उत्पन्न हुए हैं उन्हें स्पष्ट किया जाना चाहिए और उनके अनुकूल होना चाहिए। बदलते समय में, जबकि जो हम अन्य समुदायों से अपनाते हैं, वे हमारी परिस्थितियों के अनुकूल होने चाहिए।

दीनदयाल उपाध्यायजी ने धर्मनिरपेक्षता, बहुसंख्यकवाद, धर्म से समाज, देश से व्यक्ति, बाजार से लाभ, राष्ट्र से राष्ट्रवाद, लोकतंत्र से संस्कृति, संविधान से विकेंद्रीकरण, विधायिका से न्यायपालिका, शिक्षा से रोजगार, भारत से लेकर रोजगार, स्वदेशी, और कई अन्य मुद्दों को संबोधित किया है। नतीजतन, वह उपायों पर एक वैकल्पिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हुए अधिकांश समकालीन चुनौतियों का समाधान करना चाहते है। उनके सिद्धांत संघर्ष समाधान की वर्तमान भाषा को बदलने और राष्ट्र निर्माण की चुनौतियों का सामना करने के लिए पूरी तरह से अनुकूल हैं। दीनदयाल उपाध्यायजी के विचारों के विश्लेषण के लिए अधिक से अधिक गंभीर प्रयास करने की आवश्यकता है।

'पंडित जी बताते हैं कि धर्म राज्य क्यों जरूरी है।' : धर्म राज्य में सरकार के पास पूर्ण शक्ति नहीं होती है। यह धर्म से बंधा हुआ है। हमने हमेशा धर्म पर भरोसा रखा है। फिलहाल बहस चल रही है। चाहे संसद हो या सर्वोच्च न्यायालय सर्वोच्च है, और चाहे विधानमंडल या न्यायपालिका श्रेष्ठ है। यह इस बात पर बहस है कि बाएँ या दाएँ हाथ अधिक महत्वपूर्ण हैं या नहीं। विधानमंडल और न्यायपालिका दोनों सरकार की शाखाएं हैं। दोनों की अलग–अलग भूमिकाएँ हैं। प्रत्येक अपने क्षेत्र में सर्वोच्च है। एक को दूसरे पर प्राथमिकता देना एक गलती होगी। बहरहाल, विधायक जोर देते हैं, 'हम ऊंचे

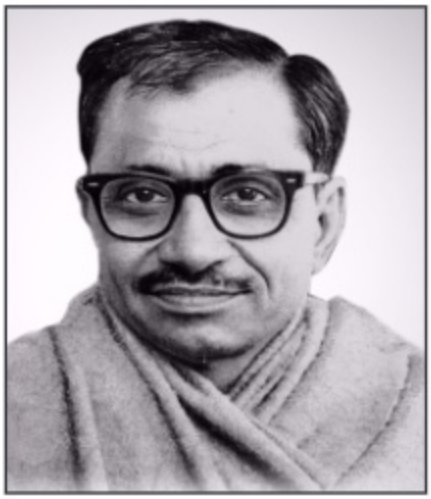

हैं।' दूसरी ओर, न्यायपालिका के सदस्य अधिक अधिकार होने का दावा करते हैं क्योंकि वे विधानमंडल द्वारा पारित कानूनों की व्याख्या करते हैं। विधायिका न्यायपालिका को अधिकार सौंपने का दावा करती है। यदि आवश्यक हो तो विधानमंडल के पास संविधान में संशोधन करने का अधिकार है। नतीजतन, यह संप्रभुता का दावा करता है। वे अब संवैधानिक संशोधनों पर चर्चा कर रहे हैं क्योंकि संविधान शक्तियां प्रदान करता है। हालांकि, मेरा मानना है कि अगर बहुमत से संविधान में संशोधन किया जाता है, तो भी यह धर्म के खिलाफ होगा। वास्तव में, विधायिका और न्यायपालिका एक ही स्तर पर हैं। न तो विधायिका और न ही न्यायपालिका श्रेष्ठ है। धर्म दोनों से श्रेष्ठ है। विधायिका के साथ–साथ न्यायपालिका को भी धर्म के अनुसार कार्य करने की आवश्यकता होगी। धर्म दोनों की सीमाओं को परिभाषित करेगा। सरकार की तीन शाखाओं, विधायिका, न्यायपालिका या लोगों में से कोई भी सर्वोच्च नहीं है। कुछ कहेंगे, 'क्यों? लोग प्रभारी हैं। वे चुनते हैं।' हालाँकि, यहाँ तक कि लोग भी संप्रभु नहीं हैं क्योंकि उन्हें धर्म के विरुद्ध कार्य करने का कोई अधिकार नहीं है।

यह कोई संयोग नहीं है कि स्वतंत्रता–पूर्व भारत में सामाजिक–राजनीतिक जीवन के कई मुद्दों को संबोधित करने के लिए साझा उपलब्ध स्थान सत्ता के लिए चुनाव की मांग करने वाले राजनीतिक दल के रूप में विकसित हुआ। यह राजनीतिक दल, दूसरों की तरह, राजनीतिक सत्ता को बनाए रखने और अपने प्रभाव को स्थिर करने और अनुसरण करने के लिए एक विशेष विचारधारा के प्रति संवेदनशील हो गया, जिसके कारण स्वतंत्रता के बाद के भारत में प्रचलित वैकल्पिक मतों के असहिष्णु होने का कारण बना। यह भी ध्यान देने योग्य है कि शासक वर्ग से अलग होने वाली किसी भी अवधारणा को अक्सर फासीवादी, कट्टरपंथी या पिछड़े के रूप में लेबल किया जाता है। भारत में, सामाजिक वैज्ञानिक किसी भी ऐसे दृष्टिकोण की जांच करने की हिम्मत नहीं जुटा पाए जो वर्तमान शासक वर्ग के साथ संरेखित न हो। सत्तारूढ़ राजनीतिक विचारधारा से मेल न खाने वाली राजनीतिक विचारधाराओं को फासीवादी का कुख्यात विशेषण देना आजादी के बाद से हमारे देश में एक राजनीतिक फैशन बन गया है, भारत में सामाजिक–राजनीतिक सोच की अकादमिक अभिव्यक्तियाँ और इस सब का स्वाभाविक परिणाम एकतरफा और स्पष्ट रूप से पक्षपातपूर्ण प्रकृति और प्रोफाइल रहा है। नतीजतन, दीनदयाल उपाध्यायजी के एकात्म मानवतावाद के विचार का पार्टी कार्यालयों और बैठकों से शैक्षिक संवाद में परिवर्तन एक उल्लेखनीय घटना है।

यह पुस्तक पंडित जी की गहन शिक्षाओं, उनकी शिक्षाओं पर विदेशी विशेषज्ञों के दृष्टिकोण और पंडित जी की शिक्षाओं के आधार पर भारत को अमृत काल में कैसे आगे बढ़ना चाहिए, को संबोधित करेगी। यह 25 सितंबर, 2023 को उनकी जयंती पर जारी किया जाएगा।

(लेखक ब्लॉगर एवं शिक्षाविद हैं)

ISSN No. 2581-3528

स्वस्थ मातृत्व के लिए वरदान है योग

डॉ. नीलम कुमारी

कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति का रूप ही नारी है

जग को जीवन देने वाली मौत भी तुझ से हारी है

वास्तव में नारी शक्ति स्वरूपा है, जगत जननी है। नारी सत्यम, शिवम सुंदरम का रूप है। नारी के अनेक रूप है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि नारी ने प्रत्येक रूप यथा माँ, बहन, पत्नि के रूप में समाज में आदर्श स्थापित किया है। इन सब रूपों में माँ का स्थान सर्वोपरि है। क्योंकि माँ शब्द मात्र एक शब्द नहीं बल्कि एक भावना है, वो शक्ति है जो परिवार, समाज व राष्ट्र को बांधकर रखती है। इसलिए स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए माँ का स्वस्थ होना अति आवश्यक है। अतः एक नारी जब गर्भावस्था धारण करती तब से लेकर शिशु में संस्कार रोपने का कार्य प्रारंभ हो जाता है। यजुर्वेद में गर्भवती महिलाओं के लिए गर्भ संस्कार के महत्व का वर्णन किया गया है। धार्मिक ही नहीं वैज्ञानिक दृष्टि से भी इसका महत्व है। इस बात से हर कोई सहमत होगा कि गर्भावस्था के दौरान महिला जो खाती है, उसका असर शिशु पर जरूर होता है। उसी प्रकार महिला क्या सोचती है, क्या बोलती है व क्या पढ़ती है, उसका असर भी गर्भ में पल रहे शिशु पर पड़ता है। इसलिए, गर्भवती महिला को उत्तम भोजन करना चाहिए और हमेशा प्रसन्न रहना चाहिए तथा योग करना चाहिए। महाभारत कथा में एक प्रसंग आता है, जब अर्जुन अपनी पत्नी सुभद्रा को चक्रव्यूह रचना का ज्ञान देते हैं। उस समय सुभद्रा के गर्भ में पले रहे अभिमन्यु भी इसे सीख लेते हैं। अगर इसे गर्भधान संस्कार का भाग कहा जाए, तो गलत नहीं होगा। हिंदू धर्म के 16 संस्कारों में गर्भधान को सबसे पहला संस्कार माना गया है। आम बोलचाल की भाषा में इसे गर्भ संस्कार कहा जाता है, जो हिंदू धर्म के अनुसार अहम है। स्वामी विवेकानन्द, शिवाजी महाराज, भक्त प्रह्लाद, उस्ताद, जाकिर हुसैन और ऐसे कई लोग के हुनर गर्भ संस्कार का महत्व दर्शाते है।

गर्भावस्था के दौरान योग अभ्यास का विशेष महत्त्व है। योग शारिरिक व मानसिक शक्ति प्रदान करता है। यह न केवल गर्भवती मां के लिए लाभकारी माना जाता है, बल्कि गर्भ में पल रहे शिशु के लिए भी इसके कई फायदे हैं। गर्भावस्था में योग करना सुरक्षित है, बशर्ते यह किसी प्रशिक्षित योग गुरु के निर्देशन में किया जाए।

योग एक ऐसा अनुशासन है, जो आपके मन, शरीर और श्वास के बीच संतुलन पर ध्यान देता है। यह संतुलन निम्नलिखित के संयोजन से तैयार किया जाता है–

शारीरिक व्यायाम अथवा मुद्राएं

ISSN No. 2581-3528

(आसन)

श्वास का अभ्यास (प्राणायाम)

गहन विश्रांति (योग निद्रा)

ध्यान (मेडिटेशन)

योग मूलतः आठ सिद्धांतों अथवा अष्टांग (यानी आठ अंगों) पर निर्भर है। इन आठ अंगों का उद्देश्य स्वः प्रबोधन पर है और ये विशुद्ध रूप में योग का अभ्यास करने की रूपरेखा तैयार करते हैं।

योग के साथ साथ कुछ आसन व व्यायाम है जो गर्भावस्था में लाभदायक हो सकते है जैसे....

1. शवासन : इस आसन में पूरे शरीर को आराम मिलता है। इस आसन को करने के लिए एक समतल जगह पर दरी या योगा मैट बिछाकर आराम से पीठ के बल लेट जाएं। अपने दोनों हाथों को शरीर से कुछ दूरी पर रखें और अपने दोनों पैरों को भी फैला लें। शरीर को पूरी तरह से ढीला छोड़ दें। पूरी तरह सांसो पर ध्यान केंद्रित करते हुए आराम से धीरे–धीरे सांस लें। इससे आपकों शारीरिक के साथ मानसिक रूप से भी आराम मिलता है। इस आसन को करने से तनाव से भी राहत मिलती है, इसलिए गर्भावस्था के दौरान होने वाले मूड स्विंग के लिए ये आसन फायदेमंद रहता है।

2. सुखासन : इस आसन को करने के लिए सबसे पहले अपने पैरों को फैलाकर आराम से बैठ जाएं। अब दाएं पैर को मोड़कर बायीं जांघ के नीचे रखें और बाएं पैर को मोड़कर दायीं जांघ के नीचे रखें। (पालती मारकर बैठना)

अपने कंधे और पीठ को बिना कोई तनाव डालें सीधा रखें। अब आंखों को बंद कर लें और एक केंद्र बिंदु पर अपना ध्यान टिकाएं। शरीर को ढीला छोड़ दें और आराम से सांस लें। इस अवस्था में दस मिनट तक रहें। इस आसन को करने से शरीर में रक्त का प्रवाह अच्छा होता है। ये मानसिक तनाव को दूर करता है साथ ही अनिद्रा से भी राहत मिलती है। इस आसन को क्षमता अनुसार ही करें।

सुखासन करते समय घुटनों को जमीन पर टिकाकर रखें इससे आपकों आसानी होगी।

3. जानुशीर्षासनः इस आसन को करने के लिए आराम से बैठ जाएं। अब एक पैर को आगे की ओर फैलाएं और दूसरे पैर को समेटकर रखें। अब अपने धड़ को आगे की ओर झुकाकर अपने पैर के तलवे को छूने की कोशिश करें। इस अवस्था में शरीर को एक सीन में रखें और कुछ क्षण सांस को रोकने की कोशिश करें। इस आसन को करने से पाचन क्रिया अच्छी होती है और पीठ दर्द में भी आराम मिलता है। मॉर्निंग सिकनेस, थकान और तनाव को कम करने में भी सहायक है। इस आसन को करते समय शरीर में ज्यादा दबाव न डालें जितना हो सके अपनी क्षमता अनुसार इस आसन को करें।

4. ताड़ासन : ताड़ासन को समस्थिति भी कहा जाता है। ताड़ शब्द का अर्थ संस्कृत में पर्वत होता है, जिसके ऊपर इस आसन का नाम रखा गया है। ताड़ासन योग का एक मूलभूत आसन है क्योंकि यह आसन अनेक आसनों का आधार है। ताड़ासन का सही तरीका यह है कि दोनों पंजों को मिलाकर या उनके बीच 10 सेंटीमीटर की जगह छोड़ कर खड़े हो जायें, और बाजुओं को बगल में रखें।

शरीर को स्थिर करें और शरीर का वजन दोनों पैरों पर समान रूप से वितरित करें। भुजाओं को सिर के उपर उठाएं। उंगलियों को आपस में फसा कर हथेलियों को ऊपर की तरफ रखें। सिर के स्तर से थोड़ा ऊपर दीवार पर एक बिंदु पर आँखें टीका कर रखें। पूरे अभ्यास के दौरान आंखें इस बिंदु पर टिका कर रखें। बाजुओं, कंधों और छाती को ऊपर की तरफ खींचें और फैलाएं।पैर की उंगलियों पर आ जायें ताकि दोनो एड़ी उपर उठ जायें।

बिना संतुलन और बिना पैरों को हिलायें, पूरे शरीर को ऊपर से नीचे तक ताने। श्वास लेते रहें और कुछ सेकंड के लिए इस मुद्रा में ही रहें। शुरुआत में संतुलन बनाए रखना मुश्किल हो सकता है लेकिन अभ्यास के साथ यह आसान हो जाएगा। आसन से बाहर निकलने के लिए सारे स्टेप्स विपरीत क्रम में करें।

यह एक चक्र है। अगले चक्र से पहले कुछ सेकंड के लिए आराम करें। 5 से 10 चक्र का अभ्यास करें। ताड़ासन के लाभ इस प्रकार हैं–

- यह आसन शारीरिक और मानसिक संतुलन विकसित करता है।
- शरीर के पोस्चर में सुधार लाता है।
- जांघों, घुटनों और टखनों को मजबूत करता है।
- रीढ़ की हड्डी में खिचाव लाकर उसके विकारों को मिटाता है।
- कटिस्नायुशूल (साइटिका) से राहत दिलाता है।
- फ्लैट पैर की परेशानी में सहायता करता है।

वास्तव में देखा जाये तो योग के अनेक लाभ है। और यह प्रत्येक आयु वर्ग बच्चे, जवान वृद्ध और स्त्री हो या पुरुष सभी के लिए लाभदायक है। और स्वस्थ मातृत्व के लिए तो योग वरदान है। इसलिए हमें स्वय को स्वस्थ रखने के लिए, परिवार, समाज व राष्ट्र को स्वस्थ रखने के लिए प्रतिदिन नियमित रूप से योग अवश्य करना चाहिए।

(लेखिका किसान पी. जी. कॉलेज सिंभावली (हापुड़) में अंग्रेजी विभाग में विभागाध्यक्ष हैं)

ISSN No. 2581-3528

ग्रामीण भारत का विकास और मीडिया शोध : एक विश्लेषण

डॉ. आशीष कुमार

भारत में ग्रामीण विकास देश के समग्र विकास के लिए आवश्यक है। भारत एक ऐसा देश है जहां आबादी का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण इलाकों में रहता है। इसलिए, ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर में सुधार करना और उन्हें बुनियादी सुविधाओं और संसाधनों तक पहुंच प्रदान करना महत्वपूर्ण है।

ग्रामीण भारत के विकास में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है। ग्रामीण क्षेत्रों में मास मीडिया की बढ़ती पहुंच के साथ, यह समझना आवश्यक हो गया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के विकास और जीवन को बेहतर बनाने के लिए मीडिया का प्रभावी ढंग से उपयोग कैसे किया जा सकता है?

मीडिया अनुसंधान मीडिया के व्यवहार और ग्रामीण समुदायों की प्राथमिकताओं में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। इस जानकारी का उपयोग ग्रामीण क्षेत्र के विकास के लिए मीडिया अभियानों और कार्यक्रमों को विकसित करने के लिए किया जा सकता है जो लक्षित दर्शकों की जरूरतों और रुचियों के अनुरूप हों। उदाहरण के लिए, शोध से पता चल सकता है कि किसी विशेष क्षेत्र में रेडियो मीडिया का सबसे लोकप्रिय रूप है, और इस जानकारी का उपयोग रेडियो कार्यक्रमों को विकसित करने के लिए किया जा सकता है जो ग्रामीण समुदायों को प्रासंगिक और उपयोगी जानकारी प्रदान करते हैं।

इसके अलावा, मीडिया अनुसंधान सूचना के प्रसार और ग्रामीण समुदायों को संदेश देने के सबसे प्रभावी तरीकों की पहचान करने में भी मदद कर सकता है। इसमें टेलीविजन, सामुदायिक रेडियो स्टेशनों का उपयोग, मोबाइल फोन–आधारित एप्लिकेशन और अन्य नवीन दृष्टिकोण शामिल हो सकते हैं जो सबसे दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुंचने में मदद कर सकते हैं।

ग्रामीण भारत के सामने प्रमुख चुनौतियों में से एक सूचना और संसाधनों तक पहुंच की कमी है। मीडिया अनुसंधान ग्रामीण समुदायों की विशिष्ट सूचना आवश्यकताओं की पहचान करने में मदद कर सकता है, जैसे स्वास्थ्य और स्वच्छता, कृषि और शिक्षा पर जानकारी। इस जानकारी को तब विभिन्न मीडिया चैनलों के माध्यम से प्रसारित किया जा सकता है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में मदद मिलती है।

सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने और वंचित समुदायों को सशक्त बनाने में मीडिया अनुसंधान भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उदाहरण के लिए, शोध से पता चल सकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा तक पहुँचने में महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इस जानकारी का उपयोग मीडिया अभियानों को विकसित करने के लिए किया जा सकता है जो लैंगिक समानता को बढ़ावा देते हैं और महिलाओं को अपने स्वयं के जीवन पर नियंत्रण करने के लिए सशक्त बनाते हैं।

भारत में ग्रामीण विकास में बुनियादी ढांचे, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और रोजगार के अवसरों का विकास शामिल है। इसे प्राप्त करने के लिए,

ISSN No. 2581-3528

भारत सरकार ने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, स्वच्छ भारत अभियान और प्रधान मंत्री आवास योजना सहित कई योजनाएं और पहल शुरू की हैं। जिसे मीडिया के द्वारा सकारात्मक तरीके से प्रचार प्रसारित किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का उद्देश्य लोगों और सामानों की आवाजाही को सुविधाजनक बनाने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों को बारहमासी सड़कों से जोड़ना है। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम एक वर्ष में कम से कम 100 दिनों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को रोजगार की गारंटी देता है। स्वच्छ भारत अभियान एक स्वच्छता अभियान है जिसका उद्देश्य भारत को स्वच्छ और खुले में शौच से मुक्त बनाना है। प्रधानमंत्री आवास योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को किफायती आवास उपलब्ध कराना है। इन सभी योजनओं में मीडिया के साधनों का प्रभावी प्रयोग किया जा गया है।

इन योजनाओं के अलावा, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं भी उनके विकास के लिए आवश्यक हैं। सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार के लिए कई पहलें शुरू की हैं। राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों को स्वास्थ्य बीमा प्रदान करती है। सर्व शिक्षा अभियान का उद्देश्य 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना है।

ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए रोजगार के अवसर महत्वपूर्ण हैं। सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमिता और स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए कई पहलें शुरू की हैं। दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना का उद्देश्य ग्रामीण युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना और उन्हें स्वरोजगार बनाने में मदद करना है।

भारत में ग्रामीण विकास देश के समग्र विकास और विकास के लिए महत्वपूर्ण है। ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोजगार के अवसरों में सुधार के लिए सरकार की पहल और योजनाएं इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में आवश्यक कदम हैं। इन पहलों के साथ, भारत एक सतत् और समावेशी विकास मॉडल बना सकता है जो इसके सभी नागरिकों को लाभान्वित करता है।

कुल मिलाकर, मीडिया अनुसंधान में ग्रामीण भारत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की क्षमता है। मीडिया की आदतों और ग्रामीण समुदायों की जरूरतों के बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करके, मीडिया अनुसंधान लक्षित मीडिया अभियानों और कार्यक्रमों के विकास में मदद कर सकता है जो ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन को बेहतर बनाते हैं।

(लेखक मीडियाविद हैं)

केशव संवाद मासिक पत्रिका के डिजिटल प्लेटफॉर्म से जुड़ें एवं केशव संवाद को सोशल मीडिया पर **FOLLOW** करें।

केशव संवाद

FACEBOOK

Keshav Samvad @keshavsamvad @KeshavSamvad samvadkeshav

ISSN No. 2581-3528

फायदेमंद है रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल

मोनिका राज

भारत के वैज्ञानिक हमेशा से ही इतिहास रचते रहे है और अंतरिक्ष में जिस तरस से भारत के सितारे बुलंदियों पर है, इससे हम समझ सकते है कि भारत का अंतरिक्ष मिशन कितना विकास कर रहा है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी इसरो ने कुछ दिनों पहले रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल आर एल वी एल ई एक्स (RLV LEX) का सफल परीक्षण कर एक बार फिर से इतिहास बनाया था। इसरो ने अंतरिक्ष यान की ऑटोनॉमस लैंडिंग सफलतापूर्वक हासिल की है।

रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल के निर्माण का उद्देश्य ऐसे पुनः प्रोज्य तंत्र को विकसित करना है जिससे वह प्रक्षेपण बाजार में तगड़ी प्रतिस्पर्धा दे सके। इसरो लगातार सफलता की सीढ़ी चढ़ रहा है। यह अंतरिक्ष यान नासा के स्पेस शटल जैसा दिखता है जिसने अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी के लो अर्थ ऑर्बिट (LEO) में सबसे बड़े ट्रांसपोर्टर के रूप में काम किया है। इसरो के इस लॉन्च व्हीकल का इस्तेमाल अभी तो उपग्रहों में होगा ही, लेकिन भविष्य में अंतरिक्ष में लॉन्च करने के लिए भी होने की संभावना है।

रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल ऑटोनॉमस लैंडिंग मिशन को कर्नाटक के चित्रदुर्ग के एटीआर से संचालित किया गया। आरएलवी लेक्स को भारतीय वायुसेना के चिनूक हेलीकॉप्टर से 4.5 किलोमीटर की ऊंचाई पर ले जाकर 4.6 किलोमीटर की रेंज पर छोड़ा गया। यह परीक्षण सफल होने के बाद रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल के सहारे रॉकेट को दोबारा लॉन्च किया जा सकता है। यह आरएलवी, अंतरिक्ष में कम लागत में मिशन को लॉन्च कर दोबारा इसका इस्तेमाल किया जा सके इस तरह तैयार किया गया है। भविष्य में इसकी भी संभावना है कि इसकी लागत कम होगी। भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी ने खुद को अरबों डॉलर के उपग्रह प्रक्षेपण बाजार में एक लागत प्रभावी लॉन्च सेवा प्रदाता के रूप में स्थापित किया है और आरएलवी इसे और मजबूत करेगी।

इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि यह एक स्वदेशी स्पेस शटल है, जिसे ऑर्बिटल री–एंट्री व्हीकल ओ आर वी (ORV) के नाम से भी जाना जाता है। इस परीक्षण के सफलता से भारत अंतरिक्ष मे सैटेलाइट लॉन्च करने लगेगा और साथ में इससे भारत की आसमानी सुरक्षा भी और मजबूत होगी। ऐसी ही टेक्नोलॉजी का फायदा चीन, अमेरिका और रूस भी लेना चाहते है, क्योंकि ऐसे यानों की मदद से किसी भी दुश्मन के सैटेलाइट्स को उड़ाया जा सकता है। इस यान के सभी परीक्षण सफल हो जाने पर इसके जरिये सैटेलाइट लॉन्च करने और दुश्मनों के सैटेलाइट को निशाना बनाकर उन्हें नष्ट करने का काम किया जा सकेगा।

इसके द्वारा डायरेक्टेड एनर्जी वेपन यानी उर्जा किरण से लक्ष्यों को भेदने वाले हथियार भी चलाए जा सकेंगे। यह यान अंतरिक्ष से यह काम कर पाएगा यानी के दुश्मनों के लिए खतरे की घन्टी बजाने के लिए काफी है। इसकी सफलता से युद्ध के तरीके में भी बदलाव आने की भी पूरी संभावना है। इन विमानों से डायरेक्टेड एनर्जी वेपन भी चलाया जा सकता है, जिससे दुश्मन की संचार तकनीक को ऊर्जा की किरण भेजकर खत्म किया जा सके।इसी के माध्यम से दुश्मन देशों में किसी कंप्यूटर सिस्टम को नष्ट करने या बिजली ग्रिड उड़ाने में सफलता मिलेगी। इसरो इस प्रोजेक्ट को 2030 तक पूरा करने की तैयारी में है, ताकि बार–बार रॉकेट बनाने का खर्च बच सके। ये सैटेलाइट को अंतरिक्ष में छोड़कर वापस लौट आएगा, जिससे स्पेस मिशन की लागत 10 गुना कम हो जाएगी। अत्याधुनिक और रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल के अगले वर्जन से भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को स्पेस में भेजा जा सकेगा।

रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल को देखने पर एक विमान की तरह दिखता है, जिसका आगे का हिस्सा नुकीला है, इसमें डबल डेल्टा विंग हैं और दो ऊपर की ओर जाती पूंछ हैं जिन्हें एलीवोन्स और रडर कहा जाता है। इसका परंपरागत ठोस बूस्टर एच एस 9 (HS9) इस तरह से डिजाइन किया गया है जिससे इसकी गति ध्वनि की गति से भी पांच गुना ज्यादा होगी। इस कार्यक्रम के इंजन का परीक्षण साल 2006 से चल रहा है। इसमें हाइपरसॉनिक उड़ान, ऑटोलैंड, शक्तियुक्त क्रूज उड़ान आदि शामिल हैं। इसमें हाइपरसॉनिक उड़ान प्रयोग एच ई एक्स (HEX), लैंडिंग प्रयोग एल ई एक्स (LEX), वापसी उड़ान प्रयोग आर ई एक्स (REX), स्क्रैमजैट प्रपल्शन प्रयोग एस पी ई एक्स (SPEX) की योजना शामिल थी, जिसमें 2016 को एचईएक्स प्रयोग किया गया जिसमें पूरी सफलता मिली चुकी है। अब लैंडिंग प्रयोग (LEX) का परीक्षण की बारी थी जिसका परीक्षण किया गया।

(लेखिका नव नालन्दा महाविहार, नालंदा , बिहार में शोधार्थी है)

ISSN No. 2581-3528

समाज और व्यक्ति के पतन की पराकाष्ठा!

प्रेम जितना छोटा शब्द है। वह उतना ही कठिन दौर से गुजरने के बाद मुकम्मल हो पाता है। एक स्त्री प्रेम करने के लिए क्या कुछ नहीं दांव पर लगा देती है! स्त्री अपने मन और देह को इतनी आसानी से हर किसी को छूने नहीं देती है। यह एक प्रक्रिया है जिसके तहत एक स्त्री किसी को अपना मन सौंप देना चाहती है! फिर भले ही उसके लिए उसे सामाजिक शुचिता को ही क्यों न लांघना पड़े। इस शुचिता को लांघने के दौरान कई बार ताने सुनने को मिलते हैं, अपनों से अलग होना पड़ता है, लेकिन इन सभी बाधाओं से गुजरने के बाद भी स्त्री को प्रेम के बदले अपने तन के टुकड़े–टुकड़े करवाने पड़ें तो यह एक सभ्य समाज को स्तब्ध कर देने वाली घटना है। प्रेम अक्सर साथ जीने–मरने की आकांक्षा के साथ बढ़ता है। प्रेम और घृणा एक साथ नहीं रह सकते हैं। ऐसे में बीते दिनों जो घटना मुम्बई में घटी वह मानवता को शर्मसार कर देने वाली है। ये घटना दिल्ली में हुए श्रद्धा वालकर कांड की याद दिलाता है। ये दोनों ही घटनाएं एक सुनियोजित हिंसा और हत्या का पर्याय है। जो एक प्रेमी मन कर ही नहीं सकता है!

पहले श्रद्धा और अब सरस्वती की मौत हमारे सभ्य समाज के सामने अनगिनत सवाल खड़े कर रही है और यह सोचने पर मजबूर कर रही है कि आखिर हम किस दिशा में जा रहें हैं? प्रेम में होना या प्रेम करना कोई गुनाह नहीं है, लेकिन कोई आदमी पहले प्रेम करने का ढोंग करें! उसके बाद प्रेमिका की निर्ममता से हत्या कर उसकी लाश को कुकर में पका कर कुत्तों को खिला दे। यह बर्बरता से भी बढ़कर है और इस बर्बरता पूर्ण कृत्य ने हमारी सामूहिक चेतना को झकझोरने का काम किया है। इतना ही नहीं यह घटना एक समाज के तौर पर हमारी नाकामी को भी दिखाती है और जवाबदेहियों से जुड़े सवाल भी खड़े करती है! बेशक, प्रेम करना एक निजी मामला हो सकता है, लेकिन क्या सब कुछ इतना यांत्रिक हो चुका है, जहां मानवीय मूल्यों और संवेदना के लिए कोई जगह नहीं बची?

सरस्वती के साथ मनोज ने जो किया उसे किसी भी रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। लिव इन रिलेशनशिप के नाम पर कब तक मौत का नंगा नाच होता रहेगा? और समाज और कानून तमाशबीन बना रहेगा। सवाल तो यह भी उठता है कि लिव इन रिलेशन को भारतीय परिवेश में भला कैसे स्वीकृति मिल सकती है। हमारे देश की पुरातन संस्कृति का गौरवशाली इतिहास रहा है। जहां हर रिश्ते की अपनी मर्यादा है। ऐसे में पश्चिमी संस्कृति का दिखावा करना कहाँ तक सही है? अब समय आ गया है जब देश का कानून लिव इन रिलेशनशिप को वैधानिक मान्यता देने के फैसले पर पुनः विचार करे, क्योंकि हमारे देश में विवाह पद्धति की रीत है जिसे किसी भी सूरत में खण्डित नहीं किया जा सकता। वरना अंजाम श्रद्धा और सरस्वती की तरह ही होगा।

हमारे देश में इन दिनों विकास और आधुनिकता के नाम सनातनी संस्कृति को मिटाने का कुचक्र बड़ी तेजी से पैर पसार रहा है। जिसे समय रहते नहीं रोका गया तो हमारी सदियों पुरानी संस्कृति धूमिल हो जाएगी। आधुनिक होना अच्छी बात है लेकिन आधुनिकता के नाम पर अमर्यादित, हिंसक और अधीर होना भी सही नहीं है। भारत संयुक्त परिवारों का देश है। ऐसे में लिव इन रिलेशनशिप की यहां कोई गुंजाइश नहीं है। लिव इन रिलेशनशिप के नाम पर बढ़ते अपराध ये बताने के लिए काफी है कि कैसे रिश्तों और संस्कृति का मखौल उड़ाया जा रहा है। कितनी श्रद्धा और सरस्वती प्रेम के नाम पर बलि चढ़ा दी जा रही है और हम है कि आधुनिक होने का दिखावा करके अपने ही घर की बहन बेटियों को बोटियों में तब्दील होते देख रहें हैं। अब वक्त की नजाकत कह रही है कि हमें रिश्तों के मर्म को समझना होगा। केवल अपनी सुविधा के नाम पर रिश्तों से खिलवाड़ करना बंद करना होगा। भारतीय संविधान ने भले ही सबको अपने हिसाब से जीवन जीने की स्वतंत्रता दी है, लेकिन रिश्तों का मजाक उड़ाना साथ रहने का दिखावा करना और जब मन भर जाए तो उसके टुकड़े कर देना यह न्यायोचित नहीं है! लिव इन रिलेशनशिप एक ऐसा ही कुचक्र है। जहां परिवार की जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ने और जिस्म की भूख मिटाने के लिए साथ होने का दिखावा भर किया जाता है। जिस रिश्ते में परिवार का भाव न हो वो प्यार तो हरगिज नहीं हो सकता। तभी तो आधुनिकता की दुहाई देने वाले आज सरस्वती की मौत पर चुप्पी साधे हुए है क्योंकि कहीं न कहीं वह भी जानते है ऐसे रिश्ते न तो हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए सही है और न ही हमारी संस्कृति में इसे जायज ठहराया जा सकता है।

– सोनम लववंशी

ISSN No. 2581-3528

मीडिया सुर्खियां (01 जून 2023 – 30 जून 2023)

1 जून : हॉकी जूनियर एशिया कप फाइनल में भारतीय टीम ने पाकिस्तान को दी करारी शिकस्त।

♦ भारत ने मीडियम रेंज की बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि–1 का सफल परीक्षण किया।

2 जून : इलाहाबाद HC की बड़ी टिप्पणी, श्रृंगार गौरी की पूजा करने से नहीं बदलेगा ज्ञानवापी मस्जिद का चरित्र।

3 जून : मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी बने ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के नए अध्यक्ष।

4 जून : क्रिकेटर सहवाग का ऐलान, ओडिशा रेल हादसा पीड़ित बच्चों को देंगे मुफ्त शिक्षा।

5 जून : अवधेश राय हत्याकांड में मुख्तार अंसारी दोषी करार, 32 साल बाद आया फैसला।

6 जून : अमेरिकी कांग्रेस को दो बार संबोधित करने वाले पीएम मोदी होंगे पहले भारतीय पीएम।

7 जून : केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में बड़ा फैसला, कई फसलों की MSP बढ़ाई गई।

8 जून : सनातन धर्म पर किताब लिखेंगे बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री, कहा– कुछ दिनों का ब्रेक लूंगा।

9 जून : दुधवा नेशनल पार्क में बाघों की मौत के बाद CM योगी सख्त, वन मंत्री और ACS से मांगी रिपोर्ट।

10. जून : MP में लाडली बहना योजना के तहत आज सवा करोड़ महिलाओं को मिली एक–एक हजार की पहली किस्त।

11 जून : न्यूजर्सी के रेस्तरां ने लॉन्च की 'मोदी जी' थाली, पीएम मोदी करने वाले हैं अमेरिका की राजकीय यात्रा।

12 जून : चंद्रयान–3 मिशन 12 से 19 जुलाई के बीच लॉन्च होगा– ISRO प्रमुख।

13 जून : यूपी के CM योगी आदित्यनाथ के ट्विटर पर हुए 2.5 करोड़ फॉलोअर्स।

14 जून : RBI गवर्नर शक्तिकांत दास को लंदन में गवर्नर ऑफ द ईयर अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

15 जून : पहलवानों के खिलाफ दर्ज FIR वापस लेगी दिल्ली पुलिस।

16 जून : नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी का नाम बदल दिया गया है, अब इसे प्राइम मिनिस्टर म्यूजियम एंड लाइब्रेरी के नाम से जाना जाना जाएगा।

17 जून : कनाडा और अमेरिका में इंडियन हाई कमीशन पर हुए हमले की जांच करेगी NIA।

18 जून : UN में 21 जून को PM मोदी की मौजूदगी में 180 देशों के प्रतिनिधि करेंगे योगासन।

19 जून : एशिया कप की तारीखों का ऐलान, 31 अगस्त से 17 सितंबर तक खेले जाएंगे मैच।

20 जून : 2024 लोकसभा चुनाव से पहले बीजेपी ने UP के सांसदों से मांगी परफॉर्मेंस रिपोर्ट।

21 जून : वॉशिंगटन में पीएम मोदी का जोरदार स्वागत, भारतीय समुदाय से मिले प्रधानमंत्री।

22 जून : 'यूक्रेन विवाद को बातचीत के जरिए सुलझाने की जरूरत', रूस को लेकर साझा बयान में बोले पीएम मोदी।

23 जून : यूपी बोर्ड के सिलेबस में बदलाव, वीर सावरकर समेत 50 महापुरुषों की पढ़ाई जाएगी जीवनी।

♦ कक्षा 9वीं में चंद्रशेखर आजाद, बिरसा मुंडा, बेगम हजरत महल, वीर कुंवर सिंह, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, गौतमबुद्ध, ज्योतिबा फुले, छत्रपति शिवाजी, विनायक दामोदर सावरकर, विनोबा भावे, श्रीनिवास रामानुजन और जगदीश चंद्र बोस की जीवनी शामिल होगी।

♦ कक्षा 10वीं में महात्मा गांधी, मंगल पांडेय, रोशन सिंह, सुखदेव, लोकमान्य तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, खुदी राम बोस और स्वामी विवेकानंद शामिल होंगे।

♦ कक्षा 11वीं में शहीद भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, डॉ भीमराव अंबेडकर, सरदार वल्लभभाई पटेल, पं दीनदयाल उपाध्याय, महावीर जैन, महामना मदन मोहन मालवीय, अरविंद घोष, राजा राममोहन राय, सरोजिनी नायडू, नाना साहब, महर्षि पतंजलि, सुश्रुत और होमी जहांगीर भाभा शामिल होंगे।
कक्षा 12वीं में रामकृष्ण परमहंस, गणेश शंकर विद्यार्थी, राजगुरू, रवींद्रनाथ टैगोर, लाल बहादुर शास्त्री, रानी लक्ष्मी बाई, महाराणा प्रताप, बंकिम चंद्र चटर्जी, आदिगुरू शंकराचार्य, गुरुनानक देव, डॉ एपीजे अब्दुल कलाम, रामानुजाचार्य, आचार्य पाणिनी, आर्यभट्ट और सीवी रमन शामिल होंगे।

24 जून : भारत से बाहर गईं 100 से ज्यादा ऐतिहासिक वस्तुएं लौटाएगा US रोनाल्ड रीगन सेंटर में बोले मोदी।

25 जून : मिस्र के सर्वोच्च सम्मान 'Order of the Nile' से सम्मानित हुए पीएम मोदी।

26 जून : उत्तराखंड में दो महीने में 149 चारधाम तीर्थयात्रियों की मौत।

27 जून : अमरनाथ गुफा की सुरक्षा में पहली बार ITBP भी हुई शामिल, चप्पे–चप्पे पर रहेगी नजर।

28 जून : स्वीडन में मस्जिद के बाहर कुरान जलाकर प्रदर्शन करने की पुलिस ने दी मंजूरी।

29 जून : PM मोदी ने ईद–उल–अजहा की मुबारकबाद दी।

30 जून : जल्द ही देवभूमि उत्तराखंड में लागू किया जाएगा UCC – सीएम पुष्कर धामी का ट्वीट।

up: अतीक की कब्जाई जमीन पर 76 परिवारों को मिला आशियाना, CM योगी ने सौंपी चाबी।

संयोजन : प्रतीक खरे

युग प्रणेता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

हिन्दी साहित्य के गौरवशाली नक्षत्र महावीर प्रसाद द्विवेदी को अपने अनूठे लेखन शिल्प के कारण हिन्दी का प्रथम लोकमान्य आचार्य माना जाता है। इनका जन्म ग्राम दौलतपुर (रायबरेली, उ.प्र.) में 09 मई, 1864 को पंडित रामसहाय दुबे के घर में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में ही हुई, जबकि बाद में वे रायबरेली, रंजीतपुरवा (उन्नाव) और फतेहपुर में भी पढ़े।

शिक्षा प्राप्ति के समय ही इनकी कुशाग्र बुद्धि का परिचय सबको होने लगा था। इन्होंने हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। शिक्षा प्राप्ति के बाद इन्होंने कुछ समय अजमेर, मुम्बई और झाँसी में रेल विभाग में तार बाबू के नाते काम किया।

इस राजकीय सेवा में रहते हुए उन्होंने मराठी, गुजराती, बंगला और अंग्रेजी का ज्ञान बढ़ाया। झाँसी में किन्हीं नीतिगत विरोध के कारण इन्होंने त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद इंडियन प्रेस, प्रयाग के स्वामी बाबू चिन्तामणि घोष के प्रस्ताव पर इन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादन का दायित्व सँभाला। थोड़े ही समय में सरस्वती पत्रिका लोकप्रियता के उत्कर्ष पर पहुँच गयी। इसका अधिकांश श्रेय आचार्य महावीर प्रसाद जी को ही जाता है। आचार्य जी ने 1903 से 1920 तक इस पत्रिका का सम्पादन किया।

हिन्दी भाषा के लेखन में उन दिनों उर्दू, अरबी, फारसी और अंग्रेजी के शब्दों की घुसपैठ होने लगी थी। आचार्य जी इससे बहुत व्यथित थे। उन्होंने सरस्वती के माध्यम से हिन्दी के शुद्धिकरण का अभियान चलाया। इससे हिन्दी के सर्वमान्य मानक निश्चित हुए और हिन्दी में गद्य और पद्य का विपुल भंडार निर्माण हुआ। इसी से वह काल हिन्दी भाषा का 'द्विवेदी युग' कहा जाता है।

सरस्वती के माध्यम से आचार्य जी ने हिन्दी की हर विधा में रचनाकारों की नयी पीढ़ी भी तैयार की। इनमें मैथिलीशरण गुप्त, वृन्दावन लाल वर्मा, रामचरित उपाध्याय, गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' लोचन प्रसाद पाण्डेय, नाथूराम शंकर शर्मा, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', गणेशशंकर 'विद्यार्थी', हरिभाऊ उपाध्याय, पदुमलाल पन्नालाल बख्शी, देवीदत्त शुक्ल आदि प्रमुख हैं।

उन्होंने स्वयं भी अनेक कालजयी पुस्तकें लिखीं। इनमें हिन्दी भाषा का व्याकरण, भाषा की अनस्थिरता, सम्पत्ति शास्त्र, अयोध्या विलाप आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त उनकी फुटकर रचनाओं की संख्या तो अगणित है। आचार्य जी ने यद्यपि साहित्य रचना तो अधिकांश हिन्दी में ही की।पर उन्हें जिन अन्य भाषाओं की जानकारी थी, उसके श्रेष्ठ साहित्य को हिन्दी पाठकों तक पहुँचाया।

आचार्य जी को अपने गाँव से बहुत प्रेम था। साहित्य के शिखर पर पहुँचकर भी उन्होंने किसी बड़े शहर या राजधानी की बजाय अपने गाँव में ही रहना पसन्द किया। वे यहाँ भी इतने लोकप्रिय हो गये कि लोगों ने उन्हें दौलतपुर पंचायत का सरपंच बना दिया। जब लोग उनके इस निर्णय पर आश्चर्य करते, तो वे कहते थे कि भारत माता ग्रामवासिनी है। यहाँ मैं अपनी जन्मभूमि का कर्ज चुकाने आया हूँ। उन्हें लेखन और गाँव की समस्याओं को सुलझाने में समान आनन्द आता था।

खड़ी बोली को हिन्दी की सर्वमान्य भाषा के रूप में स्थापित और प्रचारित-प्रसारित कराने वाले युग निर्माता आचार्य जी 21 दिसम्बर, 1938 को रायबरेली में चिरनिद्रा में सो गये। उनके लिए किसी ने ठीक कहा है कि वे सचमुच हिन्दी के 'महावीर' ही थे।

प्रेरणा विमर्श 2020 के अवसर पर केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक सिने विमर्श और भारतीय विरासत का विमोचन करते
लोक सभा अध्यक्ष श्री ओम बिडला जी, गोवा की पूर्व राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा जी,
उत्तर प्रदेश के जल शक्ति मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक अन्त्योदय की ओर का विमोचन करते सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबले जी,
उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी, वरिष्ठ लेखिका अद्वैता काला जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक पत्रकारिता के अग्रदूत का विमोचन करते उत्तर प्रदेश के मा.राज्यपाल श्री राम नाईक जी,
पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र संघचालक श्री सूर्यप्रकाश टोंक जी, माखनलाल चतुर्वेदी विवि. के पूर्व कुलपति
श्री जगदीश उपासने जी व अन्य अतिथिगण